चौदहवीं हिजरी शताब्दी का अन्त
और
इमाम महदी अलैहिस्सलाम का
प्रादुर्भाव

संकलनकर्ता

मौलवी मुहम्मद आज़म साहिब इक्सीर

प्रचारक सिलसिला आलिया अहमदिया

प्रकाशक

प्रचार-प्रसार विभाग

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

पंजाब (भारत)

विषय सूची

क्र.	विषय	पृ.

***

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

संस्थापक जमाअत अहमदिया

का

दावा

''मुझे खुदा तआला की शुद्ध और पवित्र वह्यी से सूचना दी गई है कि मैं उसकी ओर से मसीह मौऊद और महदी माहूद और आन्तरिक एवं बाह्य मतभेदों का न्यायक हूँ।''

(अरबईन नं. 1, पृष्ठ 4)

प्रकाशक की ओर से

01 मुहर्रम सन् 1401 हिजरी अर्थात 10 नवम्बर सन् 1980 ई. से पन्द्रवहीं हिजरी शताब्दी का प्रारंभ हो चुका है जिस पर सारे इस्लामिक देशों ने भव्य रंग में इस शताब्दी के स्वागत का जश्न मनाया और अब पन्द्रहवीं शताब्दी हिजरी के भी कई साल बीत चुके हैं।

क़ुरआन मजीद, हदीसों और पूर्व धर्मात्माओं के कथनानुसार मुसलमान चौदहवीं शताब्दी हिजरी के प्रारंभ से ही इस शताब्दी के सुधारक इमाम महदी एवं मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव की प्रतीक्षा में थे। अत: इस हिजरी शताब्दी के प्रारंभ में ख़ुदा तआला के आदेशानुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी संस्थापक जमाअत अहमदिया ने दावा किया कि आप ही इस हिजरी शताब्दी के सुधारक इमाम महदी और मसीह मौऊद हैं। आप लिखते हैं कि :-

1. ''जब तेरहवीं हिजरी शताब्दी का अन्त हुआ और चौदहवीं शताब्दी का प्रारम्भ होने लगा तो अल्लाह तआला ने इल्हाम के द्वारा मुझे खबर दी कि तू इस शताब्दी का अवतार है।'' (किताबुल बरीय: पृष्ठ 168)

2. ''मुझे खुदा तआला की शुद्ध और पवित्र वह्यी से सूचना दी गई है कि मैं उसकी ओर से मसीह मौऊद और महदी माहूद और आन्तरिक एवं बाह्य मतभेदों का न्यायक हूँ।''

(अरबईन नम्बर 1, पृष्ठ 4)

3. ''मैं उस ख़ुदा तआला की क़सम खाकर लिखता हूँ जिसके कब्ज़े क़ुदरत में मेरे प्राण हैं कि मैं वही मसीह मौऊद हूँ जिसकी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहीह हदीसों में भविष्यवाणी की है जो सहीह बुखारी और मुस्लिम और दूसरी

सर्वमान्य हदीसों में लिखी है और साक्ष्य के लिए ख़ुदा काफी है।''
(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1, पृष्ठ 313)

अतएव संस्थापक जमाअत अहमदिया के उपरोक्त दावों के प्रमाण पर ख़ुदा तआला की सहायता एवं समर्थन और धरती और आसमान के निशानों ने सत्यापन की मुहर लगा दी और सौभाग्यवानों को ख़ुदा के इस अवतार की जमाअत में शामिल होकर संसार में लोगों की धर्मार्थ सेवा और इस्लाम के प्रचार व प्रसार का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। लेकिन बहुत से मुसलमान और उनके उलमा अपनी मान्यता और गुमान के अनुसार इन्कार और झुठलाने के कारण अभी तक चौदहवीं हिजरी शताब्दी के सुधारक इमाम महदी एवं मसीह मौऊद के आने की प्रतीक्षा में हैं। जबकि क़ुरआन मजीद और हदीसों में वर्णित निशानियाँ नि:सन्देह तौर पर पूरी हो चुकी हैं। परन्तु उनके विचार में अभी तक उनका कोई कथित सुधारक प्रकट नहीं हुआ जब कि पन्द्रहवीं हिजरी शताब्दी के कई दशक बीत गए। घोर प्रतीक्षा करने के बाद अब मुसलमान निराशा का शिकार हो चुके हैं। कुछ लोग तो यह कहने लगे हैं कि इमाम महदी-व-मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के बारे की हदीसें और भविष्यवाणियाँ ही सही नहीं हैं, इसलिए मसीह और महदी की प्रतीक्षा करना ही व्यर्थ है। जैसा कि अल्लामा इक़बाल ने लिखा है :-

मीनारे दिल पे अपने ख़ुदा का नुज़ूल देख।
अब इन्तिज़ार-ए-महदी व ईसा भी छोड़ दे।।

*- इसी तरह शोरिश काश्मीरी एडीटर चट्टान लाहौर ने लिखा कि :-

महदी मौऊद का अक़ीदा दुष्ट और कायरों का गढ़ा हुआ है।
(चट्टान लाहौर 2 मई सन् 1962)

इसके अतिरिक्त कुछ यह कहकर अपने दिल को सांत्वना

दे रहे हैं कि यह कहीं लिखा हुआ नहीं है कि इमाम महदी का प्रादुर्भाव चौदहवीं सदी हिजरी में ही होगा और कुछ लोग यह कहकर संतुष्ट हो रहे हैं कि अब चौदहवीं हिजरी शताब्दी खत्म ही नहीं होगी। हालाँकि कई इस्लामी देश पन्द्रहवीं हिजरी शताब्दी का स्वागत भी कर चुके हैं।

काश ! हमारे मुसलमान भ्राता संजीदगी और सच्चे दिल से संस्थापक जमाअत अहमदिया के दावा पर ध्यान देते जिन्होंने बिल्कुल ठीक समय पर घोषणा की कि :-

इस्मऊ सौतस्समाअ जाअल्मसीह जाअल्मसीह,
नीज़ विष्णु अज़् ज़मीं आमद इमामे कामगार।
आसमाँ बारिद निशाँ अलवक़्त मी गोयद ज़मीं,
ईं दो शाहिद अज़ पै मन नारा ज़न चूँ बेक़रार।[1]

फिर फ़रमाया :-

वक़्त था वक़्त-ए-मसीहा, न किसी और का वक़्त
मैं न आता तो कोई, और ही आया होता !

हे मुसलमानों! आओ हम सब खुदा के उस भेजे हुए सुधारक की शिक्षाओं का पालन करके उसकी जमाअत में शामिल होकर निराशा और हताशा की अवस्था से निकलकर एक जीवित और कौमी जज़्बा से इस्लाम की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करें और अपने उज्जवल भविष्य की ओर क़दम बढ़ाएँ।

इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव से संबंधित यह लेख आदरणीय मौलवी मुहम्मद आज़म साहिब इक्सीर

---

1. ✻- आसमान की आवाज़ सुनो कि मसीह आ गया, मसीह आ गया और ज़मीन से भी सफल इमाम के आने की शुभसूचना सुनो।
✻- आसमान से निशान बरस रहे हैं और ज़मीन कह रही है कि यही वह समय है और ये दो गवाह मेरी तस्दीक़ के लिए बेक़रारों की तरह ऐलान कर रहे हैं। (अनुवादक)

प्रचारक सिलसिला अहमदिया ने संकलित किया है। जिसमें क़ुरआन की आयतों आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों और पूर्व धर्मात्माओं के कथनों को एकत्र किया गया है जिन से स्पष्ट होता है कि अवश्य इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव चौदहवीं हिजरी शताब्दी में ही होना था और उन भविष्यवाणियों के अनुसार ऐसा ही हुआ और यह सारी निशानियाँ संस्थापक जमाअत अहमदिया के सौभाग्यशाली अस्तित्व में पूरी हो चुकी है।

प्रचार-व-प्रसार विभाग समय की आवश्यकतानुसार जन साधारण के लाभ हेतु इस संकलन का हिन्दी अनुवाद किताब की दशा में प्रकाशित कर रहा है। इसका हिन्दी अनुवाद आदरणीय अलीहसन साहिब एम.ए., एच.ए. ने किया है अल्लाह तआला इसके लेखक और अनुवादक और सभी सहयोगियों को इसका प्रतिफल प्रदान करे और उनके ज्ञान को बढ़ाए और उनको धर्मार्थ सेवा की अधिक से अधिक शक्ति प्रदान करे और इस किताब को लोगों के लिए लाभप्रद बनाए। आमीन !

विनीत

नाज़िर नश्र व इशाअत

क़ादियान

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदेश

नबियों के सरदार व खात्मुन्नबीयीन सैयदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर मुसलमान को अपने माता-पिता, बच्चों और समस्त निकट संबंधियों से अधिक प्रिय हैं। इसलिए मुसलमानों के दिल में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञापालन की भावना अत्यधिक पाई जाती है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों के पतन के समय अपने महान प्रतापी आध्यात्मिक पुत्र के प्रकट होने की भविष्यवाणी की थी कि वह धर्म को जीवित करने और इस्लामी शरीअत के क़याम और इस्लाम के पुनुरुत्थान का बीड़ा लेकर खड़ा होगा। खुदा उसके द्वारा समस्त सम्प्रदाय को मिटाकर धरती पर इस्लाम को प्रभुत्व देगा। इस विश्वव्यापी महान उद्देश्य के लिए आने वाले कथित सुधारक की सहायता और समर्थन करना हर मुसलमान के लिए बहुत आवश्यक था। इसीलिए आँहज़रत सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

فَاِذَا رَأَيْتُمُوْهُ فَبَايِعُوْهُ وَلَوْحَبْوًا عَلَى الثَّلْجِ فَاِنَّهُ خَلِيْفَةُاللّٰهِ اَلْمَهْدِیُّ۔ (ابوداؤد جلد 2 باب خروج المهدی)

कि हे मुसलमानों ! जब तुम्हें उसका पता लग जाए तो तुरन्त उसकी बैअत करो चाहे तुम्हें बर्फ पर से घुटनों के बल जाना पड़े। क्योंकि वह खुदा का खलीफा महदी होगा।

फिर कहा कि जो उसे पहचान ले वह उसे

فَلْيَقْرَئْهُ مِنِّى السَّلَامَ

मेरी तरफ से सलाम कहे।

(दुर्रे मन्सूर जिल्द 2, पृष्ठ 445, बिहारुल अनवार जिल्द 13, पृष्ठ 183, ईरान से मुद्रित)

सर्वमान्य आस्था

शिया और सुन्नी किताबों के अनुसार उम्मते मुहम्मदिया की हमेशा से यह आस्था है कि जब वह कथित अवतार प्रकट हो तो मुसलमानों पर उसकी बैअत करना और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उसे सलाम पहुँचाना अति आवश्यक है। उम्मते मुहम्मदिया की उम्मते मूसवी से समानता के कारण उस कथित अवतार का तेरहवीं हिजरी शताब्दी के अन्त में या चौदहवीं हिजरी शताब्दी के प्रारंभिक काल में ईसा इब्नि मरियम के रंग में होकर आना मुक़द्दर था ताकि इस्लाम को संसार के अन्य धर्मों पर आध्यात्मिक और तार्किक ढंग से विजयी किया जाए। जिसका वादा कुरआन की आयत :-

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ وَلَوۡ کَرِهَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ۠ (سورۃ الصف، آیت 10)

में किया गया है। उम्मत के सदाचारी लोगों ने आने वाले कथित अवतार को इसी आयत का पात्र ठहराकर विभिन्न नामों से वर्णन करते रहे। जिससे ज्ञात होता है कि आने वाला मसीह, महदी, इमाम या क़ायम आले मुहम्मद वस्तुत: एक ही अस्तित्व है।

(क) तफ्सीर इब्नि जरीर में लिखा है :-

هٰذَا عِنْدَ خُرُوْجِ الْمَهْدِیِّ

कि इस आयत में वर्णित इस्लाम का प्रभुत्व महदी के ज़माने में होगा।

(ख) तफ्सीर जामिउल बयान जिल्द 29 में लिखा है :-

وَذٰلِكَ عِنْدَ نُزُوْلِ عِیْسَی بْنِ مَرْیَمَ

कि यह प्रभुत्व ईसा इब्नि मरियम के प्रादुर्भाव पर होगा।

(ग) शियों की मशहूर किताब बिहारुल अनवार जिल्द 13

पृष्ठ 13 पर लिखा है :-

نَزَلَتْ فِی الْقَائِمِ مِنْ اٰلِ مُحَمَّدٍ

कि यह आयत अलक़ायम के बारे में अवतरित हुई है।

(घ) शियों की एक और विश्वस्त किताब ग़ायतुल मकसूद जिल्द 2 पृष्ठ 123 में लिखा है :-

مراد از رسول دریں جا امام مہدی موعود است

कि इस आयत में रसूल से तात्पर्य कथित इमाम महदी अलैहिस्सलाम हैं।

मसीह और महदी

हदीसों और रिवायतों में आने वाले सुधारक के, विभिन्न विशेषताओं की दृष्टि से कई नाम बयान हुए हैं। लेकिन अधिकतर दो नाम मसीह और महदी पाए जाते हैं। हदीसों के अनुसार यह भी स्पष्ट है कि मसीह और महदी एक ही अस्तित्व के दो नाम हैं।

(1) एक हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

وَلَا الْمَهْدِیُّ اِلَّا عِیْسَی ابْنَ مَرْیَمَ

कि ईसा इब्नि मरियम के अतिरिक्त अन्य कोई महदी नहीं।

(इब्नि माजा बाब शिद्दतुज़्ज़मान पृ. 257 मिस्री कन्ज़ुल उम्माल जिल्द 7, पृष्ठ 156)

(2) एक हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट शब्दों में आने वाले ईसा इब्नि मरियम को इमाम महदी ठहराते हुए कहा :-

یُوْشِكُ مَنْ عَاشَ مِنْكُمْ اَنْ یَّلْقٰی عِیْسَی ابْنَ مَرْیَمَ اِمَامًا مَهْدِیًّا

अर्थात निकट है कि तुम में से जो जीवित हो ईसा इब्नि

मरियम से उसके इमाम महदी होने की हालत में मुलाकात करे।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 2, पृष्ठ 411 मिस्री)

(3) शियों की किताब बिहारुल अनवार में हज़रत अबू दर्दाअ रज़ि. की रिवायत है :-

اَشْبَهُ النَّاسِ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ

कि महदी सब लोगों से बढ़कर ईसा इब्नि मरियम का समरूप होगा।

नुज़ूल का अर्थ

हदीसों में ईसा इब्नि मरियम के आने के लिए 'नुज़ूल' का शब्द प्रयोग हुआ है जिससे कुछ लोगों ने यह समझा कि सम्भवत: वह आसमान से उतरेंगे। हालाँकि इस तरह कोई नहीं उतरा करता, बल्कि यदि किसी गुज़रे हुए नबी या अवतार का उतरना संभव है तो केवल समरूप और प्रतिच्छाया के रूप में।

*- इमाम सिराजुद्दीन इब्नि अलवर्दी अपनी किताब खरीदतुल अजाइब व फ़रीदतुर्रग़ाइब के पृष्ठ 214 पर लिखते हैं :-

وَقَالَتْ فِرْقَةٌ مِنْ نُزُوْلِ عِيْسٰى خُرُوْجُ رَجُلٍ يَشْبَهُ عِيْسٰى فِى الْفَضْلِ وَالشَّرَفِ كَمَا يُقَالُ لِلرَّجُلِ الْخَيْرِ مَلَكٌ وَلِلشَّرِيْرِ شَيْطَانٌ تَشْبِيْهًا بِهِمَا وَلَا يُرَادُ الْاَعْيَانُ

अर्थात एक समुदाय ने कहा कि ईसा के उतरने से एक ऐसे पुरुष का प्रादुर्भाव तात्पर्य है जो प्रतिष्ठा और महानता में हज़रत ईसा की तरह होगा। जैसे कि एक नेक आदमी को फरिश्ता और दुष्ट आदमी को शैतान कह देते हैं किन्तु उससे फरिश्ता और शैतान का अस्तित्व तात्पर्य नहीं होता।

*- इसी तरह गुरुओं के गुरु श्री मुहम्मद अकरम साबिरी

अपनी किताब 'इक्तिबासुल अनवार' के पृष्ठ 52 पर लिखते हैं :-

روحانیت کُمّل گاہے بر اربابِ ریاضت چناں تصرّف مے نُماید
کہ فاعِلِ افعالِ شاں مے گردد۔ و ایں مرتبہ را صُوفیاء بُروز مے
گویند۔ بعضے بر آنند کہ رُوحِ عیسٰی درمہدی بروز کند و از نزُول
عبارت ہمیں بُروز است۔ مطابق ایں حدیث کہ لَا الْمَهْدِیُّ اِلَّا
عِیْسٰی۔

अर्थात ऋषि, मुनि नबियों और अवतारों इत्यादि की आध्यात्मिकता कभी तपस्वियों पर ऐसा प्रभाव दिखाती है कि वह उन ऋषियों के कर्मों का कारक बन जाती है और इस स्तर के पाने को सूफी लोग समरूप ठहराते हैं। कुछ लोगों का यह मत है कि हदीस 'ईसा के अतिरिक्त कोई महदी नहीं' के अनुसार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रूह समरूप के तौर पर महदी में प्रकट होगी और नुज़ूल ईसा से तात्पर्य यही आविर्भाव है।

✻- शेख हज़रत मुहीउद्दीन इब्नि अरबी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं :-

وَجَبَ نُزُوْلُهٗ فِیْ اٰخِرِ الزَّمَانِ بِتَعَلُّقِهٖ بِبَدَنٍ اٰخَرَ
(تفسیر عرائس البیان جلد ۱، صفحہ ۲۶۲، مطبع نولکشور)

अर्थात अनिवार्य है कि अन्तिम युग में मसीह ईसा इब्नि मरियम का नुज़ूल किसी दूसरे शरीर के साथ हो।

✻- शिया फ़िर्क़ा की किताब ग़ायतुल मक्सूद पृष्ठ 21 पर लिखा है कि :-

میبذیؔ در شرح دیوان آورده کہ روحِ عیسٰی در مہدی علیہ السلام
بروزکند و نزول عیسٰی عبارت ازیں بروز است

अल्लामा मीबज़ी अपने काव्य की व्याख्या में लिखते हैं कि ईसा की रूह महदी अलैहिस्सलाम में प्रकट होगी और नुज़ूले ईसा से तात्पर्य भी महदी का प्रादुर्भाव है।

इमाम महदी अलैहिस्सलाम का स्थान

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सेवक और महान आध्यात्मिक प्रतापी पुत्र होने के कारण वस्तुतः सारे नबियों एवं अवतारों के नाम पाने के पात्र हैं। इसीलिए हज़रत शेख मुहीउद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं :-

إِنَّ الْمَهْدِيَّ الَّذِي يَخْرُجُ فِي اٰخِرِ الزَّمَانِ يَكُونُ جَمِيعُ الْاَنْبِيَآءِ
تَابِعِينَ لَهُ فِي الْعُلُومِ وَالْمَعَارِفِ لِاَنَّ قَلْبَهُ قَلْبُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (شرح فصوص الحکم صفحہ 35)

आख़िरी युग में महदी प्रकट होगा तो समस्त अवतार ज्ञान और अध्यात्म की दृष्टि से उससे कम होंगे क्योंकि उसका हृदय वस्तुतः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हृदय होगा। क्योंकि :-

لِاَنَّ بَاطِنَهُ بَاطِنُ مُحَمَّدٍ صلی اللہ عَلیہِ وسَلَّمَ
(عبد الرزاق الکاشانی علی فصوص الحکم)

के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं जिसका अर्थ यह है कि उसका हृदय मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हृदय होगा।

✻- हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया :-

يَزْعَمُ الْعَامَّةُ اَنَّهُ اِذَا نَزَلَ اِلَى الْاَرْضِ كَانَ وَاحِدًا مِنَ الْاُمَّةِ۔ كَلَّا
بَلْ هُوَ شَرْحٌ لِلْاِسْمِ الْجَامِعِ الْمُحَمَّدِيِّ وَنُسْخَةٌ مُنْتَسِخَةٌ مِنْهُ
فَشَتَّانِ بَيْنَهُ وَبَيْنَ اَحَدٍ مِنَ الْاُمَّةِ۔

(الخیر الکثیر صفحہ 27 مطبوعہ بجنور مدینہ پریس)

अर्थात लोगों का गुमान है कि मसीह जब ज़मीन पर नाज़िल होगा तो वह केवल एक उम्मती होगा। ऐसा हरगिज़

नहीं, बल्कि वह तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम की व्यापक व्याख्या होगा। (मानो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूर्ण प्रतिच्छाया और समरूप होगा) और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ही प्रतिविम्ब अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आध्यात्मिक दृष्टि से पुनर्जन्म होगा। अत: उसके स्थान और केवल एक उम्मती के स्थान में बड़ा अन्तर है। फिर फ़रमाया :-

حَقٌّ لَهُ اَنْ يَّنْعَكِسَ فِيْهِ اَنْوَارُ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

अर्थात मसीह मौऊद इमाम महदी इस चीज़ का पात्र है कि उसमें सैयदुल मुर्सलीन के नूर प्रतिबिम्बित हों।

*- शियों के प्रतिष्ठित इमाम हज़रत जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम की रिवायत है कि जब इमाम महदी ज़ाहिर होंगे तो काबा से टेक लगाकर लोगों को कहेंगे :-

اَلَا مَنْ اَرَادَ اَنْ يَّنْظُرَ اِلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ صَلَوٰتُ اللهِ عَلَيْهِ فَهَا اَنَاذَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ اَمِيْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ۔ اَلَا وَمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّنْظُرَ اِلَى الْاَئِمَّةِ مِنْ وُلْدِ الْحُسَيْنِ فَهَا اَنَاذَا الْاَئِمَّةُ۔ اَجِيْبُوْا اِلٰى مَسْئَلَتِيْ فَاِنِّيْ اُنَبِّئُكُمْ بِمَا نُبِّئْتُمْ بِهٖ وَمَالَمْ تُنَبَّئُوْا بِهٖ۔

(بحار الانوار جلد 13 باب ما يكون عند ظهوره صفحه 202)

कि हे लोगो ! सुनो जो चाहता है कि आदम व शीश को देखे तो देखे कि वह मैं हूँ। सुनो! जो चाहता है कि नूह और उसके बेटे साम को देखे तो वह मैं हूँ। सुनो! जो चाहता है कि इब्राहीम और इस्माईल को देखे तो देखे कि मैं ही इब्राहीम और इस्माईल हूँ। सुनो ! जो मूसा और यूशअ को देखना चाहता है तो मैं ही मूसा और यूशअ हूँ। सुनो ! जो चाहता है कि ईसा और शम्ऊन को देखे वह मुझे देखे कि मैं ही ईसा और शम्ऊन हूँ। सुनो ! जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

और अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु को देखना चाहता है तो मैं ही मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हूँ और अमीरुल मोमिनीन भी। सुनो ! जो इमामों को देखना चाहता है जो हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद में से हैं तो वे सब मैं ही हूँ। मेरा सन्देश स्वीकार करो क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी बातों की खबर देता हूँ जिनकी तुम्हें खबर दे दी गई थीऔर जिनकी खबर नहीं दी गई थी।

नोट :- अरबी इबारत का प्रारंभिक भाग छोड़ दिया गया है लेकिन अनुवाद सारी इबारत का है। तथा काबा से टेक लगाकर कहने से तात्पर्य ताबीरुर्रोअ्या की विद्या के अनुसार इस्लाम पर क़ायम होना है।

*- हिन्दुस्तान के मुसलमानों के एक महान शायर हज़रत नासिख़ ने सच कहा है कि :-

देखकर उसको करेंगे लोग रजअत का गुमाँ।
यों कहेंगे मोजज़े से मुस्तफ़ा पैदा हुआ।।

रसूलों के सरदार सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महान आध्यात्मिक प्रतापी पुत्र आखिरी युग के सुधारक और मसीह व महदी या क़ायम आले-मुहम्मद के प्रतिविम्ब और समरूप के रूप में अनगिनत नाम हदीसों, रिवायतों और उम्मत के औलिया अल्लाह के कथनों में वर्णित हैं। अगले पृष्ठों में हम समस्त क़ौमों के इस कथित अवतार अर्थात समस्त नबियों के समरूप का वर्णन अधिकांशत: 'इमाम महदी अलैहिस्सलाम' के नाम से करेंगे।

इमाम महदी अलैहिस्सलाम और

ख़ुदा तआला की वह्यी (संदेश)

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के महान स्थान और बुलन्द शान से स्पष्ट है कि उसका जीवित ख़ुदा के साथ एक ज़िन्दा संबंध हो। उसे वह्यी व इल्हाम से सौभाग्य प्रदान किया जाए और फरिश्ते उसके पास आया करें और उसका दावा और कार्य खुदा की वह्यी के अनुसार हो।

(क) आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

اَوْحَی اللّٰہُ اِلٰی عِیْسَی ابْنِ مَرْیَمَ

ख़ुदा तआला अपनी ओर से उस पर वह्यी अवतरित करेगा।

(मुस्लिम जिल्द 2 पृष्ठ 411, मिश्कात पृष्ठ 473)

(ख) अल्लामा इब्ने हजर अलहैसमी रहमतुल्लाह अलैहि से पूछा गया कि :-

जब मसीह मौऊद (इमाम महदी) आएगा तो क्या उस पर वह्यी अवतरित होगी ? तो उन्होंने कहा :-

نَعَمْ، یُوْحٰی اِلَیْہِ وَحْیٌ حَقِیْقِیٌّ کَمَا فِیْ حَدِیْثِ مُسْلِمٍ

हाँ, खुदा तआला उन पर सच्ची वह्यी अवतरित करेगा जैसा कि मुस्लिम की हदीस में लिखा है और आगे फ़रमाया :-

وَذٰلِکَ الْوَحْیُ عَلٰی لِسَانِ جِبْرِیْلَ اِذْ ھُوَ السَّفِیْرُ بَیْنَ اللّٰہِ تَعَالٰی وَ اَنْبِیَائِہٖ

कि यह वह्यी उसकी ओर जिब्रील ही लेकर आएँगे क्योंकि नबियों की ओर खुदा का पैग़ाम लाने के लिए वही नियुक्त हैं।

(रुहुल मआनी जिल्द 7, पृष्ठ 65)

(ग) नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहिब ने हदीस मुस्लिम के अनुसार लिखा है :-

''मसीह मौऊद (इमाम महदी अलैहिस्सलाम) पर जिब्राईल खुदा की ओर से पैग़ाम लाएगा।'' (हुजजुल किरामा पृष्ठ 431)

(घ) शियों की किताबों में हज़रत अबू जाफर से रिवायत है :-

وَيُوحىٰ اِلَيْهِ فَيَعْمَلُ بِالْوَحْيِ بِاَمْرِ اللهِ

कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम पर वह्यी होगी। अत: वह अल्लाह तआला के आदेश से उस वह्यी पर कार्यरत होगा।''

(अन्नज्मुस्साकिब जिल्द 1, पृष्ठ 66)

(ङ) हज़रत इमाम जाफर सादिक़ से एक रिवायत है :-

فَاِذَا نَامَتِ الْعُيُوْنُ وَغَسَقَ اللَّيْلُ نَزَلَ اِلَيْهِ جِبْرِيْلُ وَمِيْكَائِيْلُ وَالْمَلٰئِكَةُ صُفُوفًا۔ فَيَقُوْلُ لَهُ جِبْرِيْلُ يا سَيِّدِیْ! قَوْلُكَ مَقْبُوْلٌ وَاَمْرُكَ جائِزٌ فَيَمْسَحُ يَدَهُ علىٰ وَجْهِهٖ۔

(بحارالانوار جلد 13 صفحہ 202)

अत: जब आँखें सो जाया करेंगी और रात गहरी हो जाया करेगी तो उस (महदी) की ओर जिब्राईल और मीकाईल और दूसरे फरिश्ते कतारों में आएँगे। फिर जिब्राईल उसे कहेगा हे मेरे सरदार! तेरी बात स्वीकारणीय है और तेरा काम वैध है। फिर वह आपके चेहरे को अपने हाथ से छुयेगा (अर्थात उसे बरकत देगा)।

उपरोक्त रिवायत के बाद पूरे विस्तार से आगे यह रिवायत लिखी है कि :-

इमाम महदी अलैहिस्सलाम आकर सब नबियों के सहीफ़े (धार्मिक संदेश) सुनाएगा तो लोग कहेंगे, खुदा की क़सम ! यही सच्चे सहीफ़े हैं। हम नहीं जानते थे। इसी तरह वह (महदी) क़ुरआन पढ़ेगा तो मुसलमान कहेंगे खुदा की क़सम ! यही सच्चा क़ुरआन है जिसे अल्लाह ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा था जो हम से छूट गया था।

(बिहारुल अनवार जिल्द 13, पृष्ठ 203)

अन्ततः शिया और सुन्नी लिटरेचर की दृष्टि से इमाम महदी अलैहिस्सलाम पर वह्यी का उतरना और खुदा तआला से उसका ज़िन्दा संबंध होना स्पष्ट है।

इमाम महदी के प्रादुर्भाव का समय, क्षेत्र एवं निशानियाँ

सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस उम्मत में आने वाले महदी का केवल स्थान ही वर्णन नहीं किया बल्कि मुसलमानों के मार्गदर्शन के लिए संकेतों और भविष्यवाणियों के द्वारा –

- इमाम महदी के प्रादुर्भाव का समय
- इमाम महदी के प्रादुर्भाव का क्षेत्र
- इमाम महदी के प्रादुर्भाव की निशानियाँ इत्यादि भी वर्णन कर दी थीं।

इन भविष्यवाणियों और संकेतों के अनुसार हज़रत इमाम महदी के प्रादुर्भाव का समय तेरहवीं हिजरी शताब्दी का अन्त या चौदहवीं हिजरी शताब्दी का प्रारंभिक काल था और उसके प्रदुर्भाव का क्षेत्र दमिश्क से पूरब या हिन्दुस्तान बताया गया था और उसके प्रादुर्भाव के समय की महत्वपूर्ण निशानियों में से चाँद सूरज का रमज़ान के महीने में ग्रहण, मुसलमानों का पतन, ईसाइयत का प्रभुत्व, धरती और आसमान के नए-नए ज्ञानों की जानकारी और नए से नए आविष्कारों से ज़िन्दगी की नई करवट लेना शामिल थीं।

इमाम महदी होने का दावा

इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव का समय, क्षेत्र और निशानियों इत्यादि पर विस्तारपूर्वक प्रमाण प्रस्तुत करने से पहले हम समस्त शुभसूचनाओं और भविष्यवाणियों के अनुसार सारे इस्लामी जगत को यह शुभ सूचना देते हैं कि बिल्कुल ठीक समय पर उपरोक्त समस्त निशानियाँ पूरी हो चुकी हैं और वह कथित इमाम महदी क़ादियान ज़िला गुरदासपुर (पंजाब) में सन् 1250 हिजरी में पैदा हुआ और सन् 1290 हिजरी में खुदा तआला से संवाद और वह्यी इल्हाम का सौभाग्य पाया। जिसका नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम है। आपने घोषणा की कि :-

1. ''जब तेरहवीं हिजरी शताब्दी का अन्त होने लगा और चौदहवीं हिजरी शताब्दी प्रारंभ होने लगी तो खुदा तआला ने इल्हाम के द्वारा मुझे सूचना दी कि तू इस शताब्दी का मुजद्दिद (सुधारक) है।'' (किताबुल बरिय: पृष्ठ 168 हाशिया)

2. फिर ख़ुदा तआला ने वह्यी के द्वारा आपको संबोधित किया :-

جَعَلْنَاكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ۔

कि हमने तुम्हें मसीह इब्ने मरियम बना दिया है।

(इज़ाला औहाम पृष्ठ 632)

3. फिर खुदा ने आपको संबोधित करते हुए कहा :-

''मसीह इब्ने मरियम रसूलुल्लाह मृत्यु पा गया है और उसके रूप में होकर वादा के अनुसार तू आया है।

وَكَانَ وَعْدُ اللهِ مَفْعُوْلاً

(यह खुदा का वादा था जो पूरा ही होना था।)

(इज़ाला औहाम पृष्ठ 561)

4. अत: आपने घोषणा की कि :-

''मुझे ख़ुदा की शुद्ध और पवित्र वह्यी से सूचना दी गई है कि मैं उसकी ओर से मसीह मौऊद और महदी माहूद और आन्तरिक एवं बाह्य मतभेदों का न्यायक हूँ। यह जो मेरा नाम मसीह और महदी रखा गया है, ये दोनों नाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे दिए हैं और फिर ख़ुदा ने अपने सीधे संवाद से यही मेरा नाम रखा और फिर ज़माने की मौजूदा स्थिति ने चाहा कि यही मेरा नाम हो।''

(अरबईन भाग 1, पृष्ठ 3)

खुदा की वह्यी पर पूर्ण विश्वास

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को अपने ख़ुदा की ओर से होने और अपने ऊपर अवतरित होने वाली ख़ुदा की वह्यी पर हार्दिक विश्वास था। आपने शपथपूर्वक घोषणा की कि :-

*- ''मुझे उस महान खुदा की क़सम है जो झूठ का शत्रु और मनगढ़त बातें कहने वाले को नष्ट करने वाला है, कि मैं उसी की तरफ़ से हूँ और उसके भेजने से ठीक समय पर आया हूँ और उसके आदेश से खड़ा हुआ हूँ और वह मेरे हर क़दम में मेरे साथ है और वह मुझे नष्ट नहीं करेगा और न मेरी जमाअत को तबाही में डालेगा जब तक वह अपने समस्त काम को पूरा न कर ले जिसका उसने इरादा किया है।''

(अरबईन भाग 3, पृष्ठ 2)

*- मैं उस ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि जिस तरह उसने इब्राहीम से संवाद किया फिर इस्हाक से और इस्माईल से और याक़ूब से और यूसुफ से और मूसा से और

मसीह इब्ने मरियम से और सबके बाद हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसा संवाद किया कि आप पर सबसे अधिक स्पष्ट और पवित्र वह्यी अवतरित की। इसी तरह उसने मुझे भी अपने संवाद और संबोधन से सौभाग्य प्रदान किया। किन्तु यह सौभाग्य मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण से प्राप्त हुआ। यदि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत न होता और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुकरण न करता तो चाहे दुनिया के तमाम् पहाड़ों के बराबर मेरे कर्म होते तो फिर भी मैं कभी यह संवाद और संबोधन का सौभाग्य न पाता।'' (तजल्लियाते इलाहिया, पृष्ठ 24)

*- फ़रिश्तों के कन्धों पर इस विनीत के दोनों हाथ हैं और अलौकिक शक्तियों के सहारे से ख़ुदा के प्रदत्त ज्ञान खुल रहे हैं।'' (इज़ाला औहाम, पृष्ठ 698)

*- क़सम है मुझे उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है... एक ग़ैब (पर्दे) में हाथ है जो मुझे थाम रहा है और एक अलौकिक चमक है जो मुझे रोशन कर रही है और एक आसमानी रूह है जो मुझे शक्ति दे रही है। अत: जिसने नफ़रत करना है करे ताकि मौलवी साहिब ख़ुश हो जाएँ। ख़ुदा की क़सम मेरी नज़र एक ही पर है जो मेरे साथ है और अल्लाह के अतिरिक्त हर एक चीज़ एक मरी हुई चींटी के बराबर भी मेरी नज़र में नहीं। क्या मेरे लिए वह काफी नहीं जिसने मुझे भेजा है। मैं नि:सन्देह जानता हूँ कि वह इस तब्लीग़ (सन्देश) को नष्ट नहीं करेगा जो मैं लेकर आया हूँ।''

(ज़मीमा इज़ाला औहाम भाग 2, पृष्ठ 14, प्रथम संस्करण)

*- ''मैं उस ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसी ने मुझे भेजा है और उसने मेरा नाम नबी रखा है और उसी ने मुझे मसीह मौऊद के नाम से पुकारा

है और उसने मेरे सत्यापन के लिए बड़े-बड़े निशान प्रकट किए हैं जो तीन लाख तक पहुँचते हैं।

(ततिम्मा हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 68)

सफलता पर पूर्ण विश्वास

जिस व्यक्ति को खुदा स्वयं खड़ा करे और ताज़ा बताज़ा वह्यी से उसको प्रतिष्ठित करे, फरिश्ते उसके पास निरन्तर आते हों, उसे किसी पल नाकामी का डर नहीं हो सकता। उसे अपनी और अपने मिशन की पूर्ण सफलता पर पूर्ण विश्वास होता है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम इसी कैफीयत में फ़रमाते हैं :-

''दुनिया मुझको नहीं पहचानती पर वह मुझको जानता है जिसने मुझे भेजा है। यह उन लोगों की ग़लती और सरासर दुर्भाग्य है कि मेरी तबाही चाहते हैं। मैं वह वृक्ष हूँ जिसको ख़ुदा ने अपने हाथ से लगाया है। हे लोगो ! तुम नि:सन्देह जान लो कि मेरे साथ वह हाथ है जो अन्त समय तक मेरे साथ वफा करेगा। अगर तुम्हारे पुरुष और तुम्हारी औरतें और तुम्हारे जवान और तुम्हारे बूढ़े और तुम्हारे छोटे और तुम्हारे बड़े सब मिलकर मेरे नष्ट करने के लिए दुआएँ करें। यहाँ तक कि सज्दा करते-करते तुम्हारे नाक घिस जाएँ और हाथ लुंज हो जाएँ तब भी ख़ुदा कदापि तुम्हारी दुआ नहीं सुनेगा और नहीं रुकेगा जब तक कि वह अपने काम को पूरा न कर ले। इसलिए अपनी जानों पर अत्याचार मत करो। झूठों के मुँह और होते हैं और सच्चों के और। खुदा किसी बात को फैसले के बिना नहीं छोड़ता। जिस तरह ख़ुदा ने पहले नबियों और इन्कार करने वालों में एक दिन फैसला कर दिया उसी तरह वह अब भी फैसला करेगा... ख़ुदा

के नबियों के आने के भी एक मौसम होते हैं और फिर जाने के लिए भी एक मौसम। अत: नि:सन्देह समझो कि मैं न बे मौसम आया हूँ और न बेमौसम जाऊँगा। ख़ुदा से मत लड़ो। यह तुम्हारा काम नहीं कि मुझे तबाह कर दो।''

(ज़मीमा तोहफा गोलड़विया, पृष्ठ 13)

''यद्यपि एक व्यक्ति भी मेरे साथ न रहे और सब छोड़ छाड़कर अपनी-अपनी राह लें, तब भी मुझे कुछ डर नहीं। मैं जानता हूँ कि ख़ुदा तआला मेरे साथ है। अगर मैं पीसा जाऊँ और एक तिनके से भी कमतर हो जाऊँ और हर एक तरफ से कष्ट और गाली और धिक्कार पाऊँ, तब भी मैं अन्तत: सफल हूँगा। मुझको कोई नहीं जानता, पर वह जो मेरे साथ है। मैं कदापि नष्ट नहीं हो सकता। दुश्मनों की कोशिशें व्यर्थ हैं और ईर्ष्यालुओं की योजनाएँ निष्फल। हे मूर्खों ! और अन्धो ! मुझसे पहले कौन सत्यवादी नष्ट हुआ जो मैं नष्ट हो जाऊँगा। किस सच्चे वफादार को ख़ुदा ने अपमान के साथ नष्ट कर दिया जो मुझे नष्ट कर देगा? नि:सन्देह याद रखो और कान खोलकर सुनो ! कि मेरी रूह नष्ट होने वाली रूह नहीं और मेरी प्रकृति में असफलता का ख़मीर नहीं। मुझे वह हिम्मत और सच्चाई प्रदान की गई है जिसके आगे पहाड़ भी कुछ नहीं हैं। मैं किसी की परवाह नहीं करता। मैं अकेला था और अकेला रहने पर नाराज़ नहीं। क्या ख़ुदा मुझे छोड़ देगा ? कभी नहीं छोड़ेगा। क्या वह मुझे नष्ट कर देगा ? कभी नहीं नष्ट करेगा। दुश्मन अपमानित होंगे और ईष्यालु शर्मिन्दा, और खुदा अपने भक्त को हर मैदान में सफलता देगा। मैं उसके साथ वह मेरे साथ है। कोई चीज़ हमारा संबंध नहीं तोड़ सकती और मुझे उसकी प्रतिष्ठा और प्रताप की सौगन्ध है कि मुझे लोक और परलोक में इससे अधिक कोई चीज़ भी प्रिय नहीं कि उसके धर्म की महानता

प्रकट हो। उसका तेज चमके और उसका बोलबाला हो। उसकी कृपा के साथ किसी आज़माइश से मुझे डर नहीं, चाहे एक आज़माइश नहीं करोड़ आज़माइशें हों। आज़माइशों के मैदान में और दु:खों के जंगल में मुझे ताक़त दी गई है :-

من آنستم کہ روزِ جنگ بینی پشتِ من
آں منم کاندرمیانِ خاک و خوں بینی سرے

अत: यदि कोई मेरे पीछे चलना नहीं चाहता तो मुझसे अलग हो जाए, मुझे क्या मालूम कि अभी कौन-कौन से भयानक जंगल और काँटेदार मरुस्थल आने वाले हैं जिनको मैंने तय करना है। अत: जिन लोगों के नाज़ुक पैर हैं वे क्यों मेरे साथ कष्ट उठाते हैं। जो मेरे हैं वे मुझसे अलग नहीं हो सकते, न कष्ट से न लोगों के गाली गलौज से, न आसमानी कष्टों और परीक्षाओं से, और जो मेरे नहीं वे व्यर्थ दोस्ती का दम भरते हैं क्योंकि वे शीघ्र ही अलग किए जाएँगे और उनका अगला हाल उनके पहले से बुरा होगा। क्या हम भूकम्पों से डर सकते हैं ? क्या हम अपने प्यारे ख़ुदा की किसी परीक्षा से बच सकते हैं ? कदापि नहीं बच सकते, किन्तु उसकी दया और कृपा से। अत: जो अलग होने वाले हैं अलग हो जाएँ। उनको विदाअ (अर्थात अलग होने) का सलाम।'' (अनवारुल इस्लाम, पृष्ठ 21, 22)

''यह सिलसिला आसमान से क़ायम हुआ है। तुम ख़ुदा से मत लड़ो। तुम इसको मिटा नहीं सकते। इसका हमेशा बोलबाला है। अपने प्राणों पर अत्याचार मत करो और इस सिलसिला को हेय दृष्टि से न देखो, जो ख़ुदा की ओर से तुम्हारे सुधार के लिए पैदा हुआ और नि:सन्देह जानो कि यदि यह कारोबार मनुष्य का होता और कोई गुप्त हाथ इसके साथ न होता तो यह सिलसिला कब का नष्ट हो जाता और ऐसा धूर्त जल्द मर जाता यहाँ तक कि अब उसकी हड्डियों का भी पता न चलता। अपनी

मुखालिफत के कारोबार में पुनः गौर करो। कम से कम यह तो सोचो कि शायद ग़लती हो गई हो और शायद यह लड़ाई तुम्हारी, खुदा से हो।'' (अरबईन नम्बर 4 पृष्ठ 27)

''ईश्वरीय चमत्कार और बरकतें और ईश्वर की शक्ति के काम केवल इस्लाम में ही पाए जाते हैं और दुनिया में कोई ऐसा धर्म नहीं जो इन चमत्कारों में इस्लाम का मुकाबला कर सके। इस बात के लिए खुदा तआला ने सारे विरोधियों को आरोपी और निरुत्तर करने के लिए मुझे प्रस्तुत किया है और मैं नि:सन्देह जानता हूँ कि हिन्दुओं और ईसाइयों और सिक्खों में एक भी नहीं जो ईश्वरीय चमत्कारों, स्वीकारिताओं और बरकतों में मेरा मुकाबला कर सके। यह बात स्पष्ट है कि ज़िन्दा धर्म वही धर्म है जो ईश्वरीय चमत्कार अपने साथ रखता हो और व्यापक विशेषता का नूर उसके सिर पर चमकता हो, अत: वह **इस्लाम** है। क्या ईसाइयों में या सिक्खों में या हिन्दुओं में कोई ऐसा है जो इसमें मेरा मुकाबला कर सके ? अत: मेरी सच्चाई के लिए यह पर्याप्त प्रमाण है कि मेरे मुकाबले पर कोई ठहर नहीं सकता। अब जिस तरह चाहो अपनी तसल्ली कर लो कि मेरे प्रादुर्भाव से वह भविष्यवाणी पूरी हो गई जो बराहीन अहमदिया में क़ुरआन की इच्छानुसार थी और वह यह है कि :-

هُوَالَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ

(तिर्याकुल क़ुलूब पृष्ठ 54)

''यह मनुष्य की बात नहीं ख़ुदा तआला का इल्हाम और प्रतापी ख़ुदा का काम है... इस्लाम के लिए फिर उसी ताज़गी और चमकार का दिन आएगा जो पहले समयों में आ चुका और वह सूर्य अपनी पूरी विशेषता के साथ फिर चढ़ेगा जैसा कि पहले चढ़ चुका है। लेकिन अभी ऐसा नहीं। अवश्य है

कि आसमान उसको चढ़ने से रोके रहे जब तक कि मेहनत और जाँफ़िशानी से हमारे जिगर खून न हो जाएँ और हम सारे आरामों को उसके प्राकाश्य के लिए न खो दें और इस्लाम की प्रतिष्ठा के लिए सारे अपमान स्वीकार न कर लें। इस्लाम का ज़िन्दा होना हम से एक फ़िदिया (क़ुर्बानी) चाहता है, वह क्या है ? हमारा उसी राह में मरना। यही मौत है जिस पर इस्लाम की ज़िन्दगी, मुसलमानों की ज़िन्दगी और ज़िन्दा ख़ुदा की तजल्ली आधारित है और यही वह चीज़ है जिसका दूसरे शब्दों में इस्लाम नाम है। इसी इस्लाम का ज़िन्दा करना अब ख़ुदा तआला चाहता है।'' (फतह इस्लाम, पृष्ठ 11)

नोट :- अब हम इस विषय को निम्नलिखित पाँच महत्वपूर्ण खण्डों में वर्णन करेंगे।

पाँच महत्वपूर्ण खण्ड

1. इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव का समय ?
2. इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव का क्षेत्र ?
3. इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव की निशानियाँ?
4. इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव की प्रतीक्षा !
5. इमाम महदी अलैहिस्सलाम की कुछ घोषणाएँ और उपदेश !

प्रथम खण्ड

इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव का समय

(तेरहवीं हिजरी शताब्दी का अन्त काल + चौदहवीं हिजरी शताब्दी का प्रारंभिक काल)

क़ुरआन करीम पर पूर्णत: ध्यान देने और हदीसों के अध्ययन एवं उम्मत के बुजुर्गों के रोअया, कश्फ़ और वर्णनों से स्पष्ट होता है कि हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम (जो मसीह मौऊद भी हैं) के प्रादुर्भाव का समय और काल तेरहवीं हिजरी शताब्दी का अन्तकाल या चौदहवीं हिजरी शताब्दी का प्रारंभिक काल है।

(क) क़ुरआन मजीद की दृष्टि से

(1)

يُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَی الۡاَرۡضِ ثُمَّ یَعۡرُجُ اِلَیۡہِ فِیۡ یَوۡمٍ کَانَ
مِقۡدَارُہٗۤ اَلۡفَ سَنَۃٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ (سورۃ السجدہ، آیت 6)

अर्थात अल्लाह तआला आसमान से धरती की ओर अपने फैसले का प्रबन्ध करता रहेगा, फिर एक अवधि के बाद वह धर्म आसमान की ओर उठ जाएगा जिसका समय तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम की पहली तीन हिजरी शताब्दियों को समस्त शताब्दियों से श्रेष्ठ ठहराया है जिसके बाद धर्म आसमान की ओर चढ़ना था फिर पूरा एक हज़ार वर्ष बीतने के बाद पुन: सन्मार्गदर्शन सुनियोजित था। घटनाओं की दृष्टि से यह सत्य है कि तेरह शताब्दियाँ बीतने

के पश्चात वह समय आ गया कि संसार के समस्त धर्मों के अनुयायी वर्तमान युग के अवतार की प्रतीक्षा करने लगे। इस्लाम के प्रभुत्व और पुनरुत्थान का वस्तुत: यही वह समय था जिसके लिए इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव हुआ।

2. इस्माईली फ़िर्क़ा के मशहूर विद्वान जनाब डाक्टर ज़ाहिद अली हैदराबाद दक्कन कालेज में अरबी के प्रोफेसर और उप प्रधानाचार्य थे। उन्होंने सन् 1373 हिजरी अर्थात 1954 ई. में ''हमारे इस्माईली मज़हब की हक़ीक़त और उसका निजाम'' नामक एक किताब प्रकाशित की। इसमें बहुत से उद्धरण प्रस्तुत करके उन्होंने बताया कि قَائِمُ الْقِيٰمَةِ क़ाइमुल क़ियाम: (अर्थात इमाम महदी अलैहिस्सलाम) का प्रादुर्भाव सातवें हज़ार साल के प्रारंभ पर अवश्य है। उदाहरणस्वरूप लिखा है :-

اِنَّ الْاَدْوَارَ سِتَّةٌ اَوَّلُهَا دَوْرُ اٰدَمَ....... وَالدَّوْرُ السَّادِسُ دَوْرُ مُحَمَّدٍ.....وَالدَّوْرُ السَّابِعُ دَوْرُ الْقَائِمِ ...... سَابِعُهُمُ الْمَهْدِىُّ الَّذِىْ يَخْتِمُ الدُّنْيَا وَ تَنْفَتِحُ الْاٰخِرَةُ۔

अर्थात दौर छ: हैं। पहला आदम अलैहिस्सलाम का दौर है और छठा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दौर और सातवाँ दौर दौर-ए-क़ाइम (अर्थात इमाम महदी अलैहिस्सलाम का - अनुवादक) है जो आदम से सातवाँ महदी है जिससे एक दुनिया समाप्त और दूसरी का आरम्भ होगा। (किताबुल अदिल्ला वश्शवाहिद, जाफर बिन हुसैन उद्धृत उपरोक्त पुस्तक खण्ड 6)

छ: दौरों का विवरण वस्तुत: क़ुरआन शरीफ से लिया गया है। अत: लिखा है :-

(2)

اصحابِ تاویل گُفتہ اند کہ ایں شش روز کہ در قرآن مے آید آسمان و زمین را دریں مُدّت آفریدہ اند۔ شش دَور پیغمبر مرسل را مے خواہد۔ ہر دَورے روزے و ہر روزے ہزار سال۔

اِنَّ یَوۡماً عِنۡدَ رَبِّکَ کَاَلۡفِ سَنَۃٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ

कि व्याख्याकार कहते हैं कि छ: दिन जो क़ुरआन करीम में आए हैं जिन में धरती और आसमान पैदा किया गया है वह नबी और रसूलों के छ: दौरों की ओर संकेत करते हैं। हर दौर एक दिन का और हर दिन एक हज़ार वर्ष का है। जैसा कि क़ुरआन करीम में लिखा है कि एक दिन तेरे रब्ब के निकट तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष के बराबर है।

क़ुरआन करीम से उद्धृत इस व्याख्या के अनुसार सातवें हज़ार का इमाम जो क़ाइमुल क़ियाम: या महदी है, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम के रूप में प्रकट हुआ।

(तोहफा गोलड़विया, पृष्ठ 154, लेक्चर सियालकोट)

(3)

اِھۡدِنَاالصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡھِمۡ ۙ۬ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡھِمۡ وَلَاالضَّآلِّیۡنَO(سورۃ الفاتحہ، آیت7-6)

इस आयत की व्याख्या में अल्लामा इमाम सैयद महमूद अलवसी मुफ़्ती बग़दाद लिखते हैं :-

اَلۡمُرادُبِالۡمَغۡضُوۡبِ علَیۡھِمۡ اَلۡیَھُوۡدُوَبِالضَّآلِّیۡنَ النَّصٰرٰی

(روح المعانی جلد اوّل صفحہ 82)

अर्थात **मग़ज़ूब अलैहिम** से यहूदी और **द्वाल्लीन** से ईसाई तात्पर्य हैं। यही अर्थ इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु अन्हु, इब्ने हबान इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिवायत से बयान किए हैं और मेरे ज्ञान के अनुसार व्याख्याकारों ने इन अर्थों से मतभेद नहीं किया। (उसी से उद्धृत)

स्पष्ट है कि यहूदियों और ईसाइयों में अन्तर हज़रत मसीह इब्ने मरियम के आने से हुआ जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद तेरहवीं शताब्दी के अन्तकाल में आए थे, इसलिए

अवश्य था कि उम्मते मुहम्मदिया का मसीह भी उसी तरह तेरहवीं शताब्दी के अन्तकाल में प्रकट होता। अत: मौलाना हाली, अबुल खैर नवाब नूरुल हसन खान साहिब, नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहिब और अल्लामा इक़बाल के कथनानुसार उम्मते मुहम्मदिया में भी यहूदियों और ईसाइयों की सी यह हालत पैदा हो गई जिसे देखते हुए अल्लामा ने कहा :-

वज़ा में तुम हो नसारा तो तमद्दुन में हनूद
ये मुसलमाँ हैं जिन्हें देखकर शर्माएँ यहूद

(4)

اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًاo (المزمل، آیت 16)

हे लोगो ! हमने तुम्हारी ओर एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुम पर उसी तरह निगरान है जिस तरह फिरऔन की ओर रसूल भेजा था। मानो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मूसा नबी की तरह हैं। इस लिए मूसवी सिलसिला की तरह मुहम्मदी सिलसिला में भी तेरहवीं शताब्दी बीतने पर मसीह मौऊद (इमाम महदी) का आना आवश्यक था।

(5)

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ (سورۃ النور، آیت 56)

अल्लाह तआला ने अच्छे कर्म करने वाले मोमिनों से वादा कर रखा है कि उन्हें धरती में अवश्य खलीफ़ा बनाएगा जिस तरह कि उनसे पहले लोगों को खलीफ़ा बनाया।

इस आयत को वर्णन करके हज़रत अली इब्ने हुसैन ने फ़रमाया :-

نَزَلَتْ فِى الْمَهْدِيِّ

कि यह आयत इमाम महदी के बारे में अवतरित हुई है।

इसी तरह अबू अब्दुल्लाह से वर्णित है कि इससे महदी और उसकी जमाअत तात्पर्य है।

(बिहारुल अनवार जिल्द 13, पृष्ठ 13)

महदी, मसीह मौऊद का ही दूसरा नाम है और इस आयत में ख़ुदा तआला ने उसके आने को, पहले आने वाले मसीह से समानता अनिवार्य ठहराई है अर्थात् जिस तरह वह अपने सिलसिला में तेरहवीं शताब्दी गुज़रने पर आया था उसी तरह महदी अर्थात उम्मते मुहम्मदिया का मसीह भी तेरहवीं हिजरी शताब्दी के गुज़रने पर आएगा।

(6)

وَّاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ ۔ (سورۃ الجمعۃ، آیت 4)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाद में आने वाले ऐसे लोगों में भी प्रकट होंगे जो अभी सहाबा रज़ि. से नहीं मिले। हदीस बुखारी शरीफ की किताबुत्तफ़्सीर में लिखा है कि जब यह आयत अवतरित हुई तो कुछ सहाबा रज़ि. के पूछने पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के कन्धे पर हाथ रखकर कहा कि जब ईमान धरती से उठकर सुरैया सितारे पर चला जाएगा तब फ़ारस की नस्ल में से कोई खड़ा होकर दोबारा ईमान को धरती पर क़ायम करेगा। इस आयत की संख्या अरबी वर्णाक्षरों की गणना के अनुसार 1275 बनती है। जिससे यह संकेत मिलता है कि आने वाला कथित सुधारक तेरहवीं शताब्दी हिजरी के अन्तकाल में प्रकट होगा।

(ख) हदीसों की दृष्टि से

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

(1)

اَلْاٰیَاتُ بَعْدَ الْمِأَتَیْنِ

(مشکٰوۃ مجتبائی، صفحہ 271، ابنِ ماجہ و مستدرک حاکم عن ابی قتادۃؓ)

अर्थात इमाम महदी की निशानियाँ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के बाद दो विशेष शताब्दियाँ छोड़कर एक हज़ार वर्ष बीतने पर प्रकट होंगी। निशानियों का प्रकट होना स्वयं इमाम महदी के प्रादुर्भाव के समय का निर्धारण है। अर्थात तेरहवीं हिजरी शताब्दी बीतने पर।

(2)

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِذَا مَضَتْ اَلْفٌ وَّمِأَتَانِ وَاَرْبَعُوْنَ سَنَۃً یَبْعَثُ اللّٰہُ الْمَھْدِیَّ۔

(النجم الثاقب جلد 2 صفحہ 209)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब एक हज़ार दो सौ चालीस (1240) वर्ष बीत जाएँगे तो अल्लाह तआला महदी को पैदा करेगा।

(3)

اِنَّ اللّٰہَ یَبْعَثُ لِھٰذِہِ الْاُمَّۃِ عَلٰی رَأْسِ کُلِّ مِائَۃِ سَنَۃٍ مَنْ یُّجَدِّدُ لَھَا دِیْنَھَا۔ (مشکوۃ مطبع نظامی دہلی صفحہ 14 کتاب العلم و ابو داؤد جلد 2 صفحہ 212 کتاب الملاحم باب ما یذکر فی قرن المائۃ مطبع نولکشور)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :-

अल्लाह तआला इस उम्मत के लिए हर शताब्दी के सर पर मुजद्दिद (सुधारक) पैदा करता रहेगा। तेरह शताब्दियों के मुजद्दिदों की कई सूचियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इस हदीस के अनुसार उम्मत के उलमा विश्वास रखते हैं कि चौदहवीं शताब्दी (हिजरी) के सर पर आने वाले मुजद्दिद, इमाम महदी अलैहिस्सलाम होंगे। अतः तेरह शताब्दियों के मुजद्दिदों की सूची प्रस्तुत करते हुए हुजजुल किरामा में लिखा है :-

بر سر مائتہ چہار دہم کہ دہ سال کامل آں را باقی است اگر ظہور مہدی علیہ السلام و نزولِ عیسٰی صورت گرفت پس ایشاں مجدد و مجتہد باشند۔ (حجج الکرامہ صفحہ 139 مطبوعہ 1291ھ)

अर्थात चौदहवीं शताब्दी (हिजरी) प्रारंभ होने में दस वर्ष शेष हैं। यदि इसमें महदी व ईसा का प्रादुर्भाव हो जाए तो वही चौदहवीं शताब्दी के मुजद्दिद व मुज्तहिद होंगे।

*- पत्रिका 'अन्जुमन ताईदे इस्लाम' के अप्रैल अंक सन् 1920 ई. में लिखा गया :-

हदीसों में मरियम व इब्ने मरियम नाम आया है कि वह शताब्दी के सर पर आएगा और चौदहवीं शताब्दी (हिजरी) का मुजद्दिद होगा।

(4)

हज़रत अबू जाफर पुत्र मुहम्मद से वर्णित है :-

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ کَیْفَ تَہْلِكُ اُمَّةٌ اَنَا اَوَّلُھَا وَ اِثْنَا عَشَرَ مِنْ بَعْدِیْ مِنَ السُّعَدَاءِ وَ اُولِی الْاَلْبَابِ وَالْمَسِیْحُ ابْنُ مَرْیَمَ اٰخِرُھَا۔ (اکمال الدّین صفحہ 157)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :-

वह उम्मत कैसे हलाक हो सकती है जिसके प्रारंभ में मैं हूँ और मेरे बाद बारह सदाचारी और विद्वान व्यक्ति हों और मसीह इब्ने मरियम उसके अन्त में हों। यह वृत्तान्त विश्वसनीय शिया लिटरेचर में वर्णित है और शिया लिटरेचर में उम्मते मुहम्मदिया के खलीफ़ों की समानता उम्मते मूसवी के खलीफ़ों से आवश्यक समझी गई है। (नूरुल अनवार, पृष्ठ 56)

मूसवी सिलसिला के बारह विशिष्ट खलीफ़ों के बाद चौदहवीं शताब्दी के सर पर मसीह इब्ने मरियम आए। उम्मते मुहम्मदिया के आखिर में आने वाले का नाम भी मसीह इब्ने

मरियम रखा गया है और उसका प्रादुर्भाव भी बारह सौभाग्यवानों के बाद हुआ है। जिससे स्पष्ट है कि उम्मते मुहम्मदिया का मसीह इब्ने मरियम अर्थात इमाम महदी अलैहिस्सलाम का भी चौदहवीं शताब्दी के सर पर आना निश्चित था।

5. लेखक ''दबिस्तान-ए-मज़ाहब'' प्रकाशित सन् 1324 हिजरी में इस्माईलिया फ़िर्क़ा के अक़ीदों का वर्णन करते हुए लिखते हैं :-

و گفتہ اند مہدی آخر الزماں عبارت از محمد بن عبد اللہ است و از مخبر صادق روایت کنند کہ فرمود عَلٰی رأسِ اَلْفٍ وَّ ثَلٰثِ مِائَةٍ تَطْلَعُ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا۔ گویند لفظ شمس در ایں حدیث کنایہ از محمد بن عبد اللہ است۔

(دبستان مذاہب فارسی صفحہ 355 از جناب دوست محمد خان)

कि महदी आख़िरुज़्ज़मान, का स्पष्टीकरण मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह से है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उन्होंने फ़रमाया तेरहवीं शताब्दी (हिजरी) पर सूरज पश्चिम से निकलेगा। कहते हैं कि इस हदीस में सूरज के निकलने से तात्पर्य इमाम महदी का प्रादुर्भाव और प्राकाश्य है।

वस्तुत: तीसरी हिजरी शताब्दी में इस्माईलियों ने उपरोक्त स्पष्टीकरण, हदीस से اَلْفٍ (अल्फिन) शब्द को छोड़कर किया है। हालाँकि यह केवल जल्दबाज़ी थी। मूल शब्द तो तेरहवीं शताब्दी पर प्रादुर्भाव होने के हैं।

6. हदीसों में जो निशानियाँ वर्णित हैं उनके अनुसार इमाम महदी (मसीह) ने ईसाइयत के ग़ल्बा (प्रभुत्व) के समय आना था। क्योंकि उसका काम يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ (सलीब को तोड़ना) बताया गया था और ईसाइयत का यह ग़ल्बा तेरहवीं हिजरी शताब्दी में अपने चरमोत्कर्ष को पहुँच गया। अत: इन हदीसों

के अनुसार इमाम महदी अलैहिस्सलाम तेरहवीं हिजरी शताब्दी के अन्तकाल और चौदहवीं हिजरी शताब्दी के प्रारंभिक काल में प्रकट होना था।

(ग) उम्मत के विद्वानों और सूफी सन्तों के ब्रह्मज्ञान एवं भविष्यवाणियों की दृष्टि से

1. बारहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद हज़रत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया :-

عَلَّمَنِیْ رَبِّیْ جَلَّ جَلالُهٗ اَنَّ الْقِیٰمَةَ قَدِ اقْتَرَبَتْ وَالْمَهْدِیَّ تَهَیَّأَ لِلْخُرُوْجِ۔ (تفہیمات الٰہیہ جلد 2 صفحہ 123)

अर्थात बड़ी महानता वाले मेरे रब्ब ने मुझे बताया है कि क़यामत निकट है और महदी शीघ्र प्रकट होने वाला है।

2. लगभग 800 वर्ष पहले दिल्ली के निकट एक साहिब-ए-कश्फ व करामात बुजुर्ग (चमत्कारी सिद्ध पुरुष - अनुवादक) नेमतुल्लाह वली साहिब हुए हैं उनके मशहूर फारसी क़सीदा में अन्तिम युग के हालात वर्णित हैं। उन्होंने अरबी वर्णाक्षर 'ग़' 'र' की सांकेतिक संख्या अर्थात हिजरी सन् के 1200 वर्ष बीतने के बाद अति महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रकट होने का वर्णन करके फ़रमाया :-

महदी-ए-वक़्त व ईसा-ए-दौराँ
हर दौरा शहसवार मी बीनम्

कि महदी और ईसा के समय को मैं बड़ी तेज़ी से आता देख रहा हूँ। (अरबईन फी अहवालिल महदीयीन प्रकाशित 1268 हिजरी हज़रत नेमतुल्लाह वली रहमतुल्लाह अलैहि का असली कसीदा मक्तबा पाकिस्तान लाहौर)

3. अहले सुन्नत के मशहूर इमाम हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने हदीस اَلْاٰيَاتُ بَعْدَ الْمِأَتَيْنِ (अल आयातु बादल मिअतैन) का अर्थ बयान करते हुए फ़रमाया कि :-

وَيَحْتَمِلُ اَنْ يَّكُوْنَ اللَّامُ فِي الْمِأَتَيْنِ بَعْدَ الْاَلْفِ وَهُوَ وَقْتُ ظُهُوْرِ الْمَهْدِيِّ۔

(مرقاة شرح مشکوۃ جلد5 صفحہ185 مشکوۃ مجتبائی صفحہ 271)

अर्थात इस हदीस में मिअतैन पर शब्द अलिफ लाम स्पष्ट करता है कि यह दो शताब्दियाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत से एक हज़ार वर्ष बीतने के बाद गिनी जाएँगी। अर्थात 1200 वर्ष बाद निशान प्रकट होंगे और वही इमाम महदी के प्रकट होने का समय है।

4. नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहिब ने इसी हदीस की व्याख्या में लिखा है कि यह दो सौ वर्ष, हिजरत के एक हज़ार वर्ष बीतने के पश्चात् तात्पर्य हैं। जैसा कि कतिपय विद्वानों ने इसकी यही व्याख्या की है। अत: हुजजुल किरामा पृष्ठ 393 पर लिखा है कि :-

مراد بایں دو صد سال ازالف ہجرت بود ۔چنانکہ بعض از اہل علم تاویل ظہور الآیات بعد المِأَتَیْنِ ہم چنیں کردہ اند.

5. हज़रत हाफ़िज़ बरखुर्दार निवासी चट्ठी शेखाँ ज़िला स्यालकोट ने अपनी किताब 'अनवाअ' के भाग नुज़ूल ईसा में लिखा है कि :-

पिच्छे इक हज़ार दे गुज़रन त्रि सौ साल
हज़रत महदी ज़ाहिर होसी कर्सी अदल कमाल

6. श्री क़ाज़ी इर्तज़ा अली खान ने अपनी पत्रिका 'महदी नामा' के पृष्ठ 2 पर इमाम महदी का ज़माना तेरहवीं हिजरी शताब्दी से पन्द्रहवीं हिजरी शताब्दी ठहराया है।

7. स्व. मौलवी हकीम सैयद मुहम्मद हुसैन प्रमुख अमरोहा

ने भी महदी के प्रकट होने का समय 1300 हिजरी लिखा है।

(कवाकिब दुर्रिया पृष्ठ 155)

8. जमालपुर के मशहूर सूफी मजज़ूब हज़रत ग़ुलाब शाह ने सन् 1278 हिजरी में खबर दी कि :-

''ईसा जो आने वाला था वह पैदा हो गया है।''

(निशान-ए-आसमानी पृष्ठ 21)

9. हज़रत ख्वाजा हसन निज़ामी दबीर हल्का निज़ामुल मशाइख दिल्ली ने एक पम्फलेट 'शेख सन्नोसी और ज़हूर इमाम महदी आख़िरुज़्ज़मान' के नाम से प्रकाशित किया था। उन्होंने लिखा कि सारा अरब इस ज़माने में इमाम महदी अलैहिस्सलाम की प्रतीक्षा कर रहा है और सबके अनुमान यही हैं कि चौदहवीं शताब्दी हिजरी के प्रारंभिक काल में ही प्रकट होंगे। अरब देशों के अपने भ्रमण के समय अरब के कई विद्वानों से अपनी मुलाक़ात का वर्णन करते हुए अन्त में लिखते हैं :-

''क्या आश्चर्य है कि यह वही समय हो और सन् 1330 हिजरी में सनोसी की भविष्यवाणी के अनुसार इमाम महदी का प्रकटन हो जाए और यदि वह समय अभी नहीं आया तो सन् 1340 हिजरी तक तो प्रकटन अवश्य है। क्योंकि यदि अधिकतर बुज़ुर्गों की भविष्यवाणियों का अवलोकन किया जाए तो सन 1340 हिजरी तक सब का संयोग हो जाता है।'' (उपरोक्त किताब आखिरी पृष्ठ)

10. گویند شاہ ولی اللہ محدّث دہلویؒ تاریخ ظہورِ اُو در لفظ چراغ دین یافتہ و بحساب جمل عددِ وے یک ہزار دو صد شصت و ہشت می شود۔ (حجج الکرامہ فی آثار القیامہ صفحہ 394)

हज़रत शाह वलीउल्लाह रहमतुल्लाह अलैहि ने इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रकट होने की तिथि शब्द चिराग़दीन में बयान की है। जो कि अब्जद वर्णाक्षरों की गणना की दृष्टि से एक

हज़ार दो सौ अरसठ (1268) हिजरी का समय बनता है।

11. मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपने अखबार इशाअतुस्सुन्न: जिल्द 6, अंक 3 पृष्ठ 61 पर ईसा व महदी के प्रकटन को चौदहवीं शताब्दी हिजरी में माना एवं वर्णन किया है।

12. अबुल खैर नवाब नूरुल हसन खान साहिब ने लिखा :-

''महदी अलैहिस्सलाम का प्रकटन तेरहवीं हिजरी शताब्दी पर होना चाहिए था। किन्तु यह शताब्दी बीत गई और महदी न आए अब चौदहवीं शताब्दी हमारे सर पर आती है... सम्भव है कि अल्लाह तआला अपनी कृपा और दयादृष्टि करे, चार छ: वर्ष के अन्दर महदी प्रकट हो जाएँ।'' (इक्तिराबुस्साअत पृष्ठ 221)

13. भोपाल के शासक नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहिब ने बड़ी जाँच पड़ताल और तमाम् भविष्यवाणियों एवं निशानियों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करने के पश्चात् अपनी किताब में लिखा :-

بعض از مشائخ و اہل علم گفتہ اند کہ خُروجِ اُو بعد از دو از دہ صد سال از ہجرت شود ورنہ از سیز دہ صد تجاوز نہ کند۔

(حجج الکرامہ صفحہ 394)

कि कई बुज़ुर्गों और ज्ञानियों के निकट इमाम महदी का प्रकटन हिजरी के 1200 वर्ष बाद होगा लेकिन 1300 वर्ष से आगे नहीं बढ़ेगा।

14. अल्लामा अश्शअरानी (देहान्त सन् 976 हिजरी) ने अपनी किताब ''अलयवाक़ीत वल जवाहर'' में लिखा है :-

مَوْلِدُہٗ لَيْلَةَ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ سَنَةَ خَمْسِيْنَ وَ مِئَتَيْنِ بَعْدَ الْاَلْفِ۔

(نور الابصار فی مناقب آل بیت النبی المختار للشیخ الشبکنجی)

कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम का जन्म सन् 1250 हिजरी

में होगा।

15. हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दस देहलवी (देहान्त सन् 1239 हिजरी) अपनी किताब ''तोहफा इस्ना अशरिया'' के सप्तम खण्ड में इमामत के विषय में फरमाते हैं कि अहले सुन्नत महदी के प्रकटन को हज़ार वर्ष से पहले कदापि नहीं मानते क्योंकि उनके निकट कयामत की निशानियों का प्रकटन सन् 1200 हिजरी गुज़रने के पश्चात होगा।

16. इमाम महदी अलैहिस्सलाम के निशान चाँद-सूरज ग्रहण के बारे में जनपद मुल्तान के एक बड़े विद्वान हज़रत शेख अब्दुल अज़ीज़ पहारवी का मशहूर शैर है :-

درسن غاشی دو قران خواہد بود

ازپئے مہدی و دجّال دو نشاں خواہد بود

कि ''ग़ाशी'' की संख्या अर्थात् सन् 1311 हिजरी में यह दो ग्रहण होंगे जो महदी और दज्जाल के प्रकट होने का निशान होंगे। (हलफिया बयान अहमद खान साहिब खाकवानी अफ़गान पुत्र अब्दुल खालिक खान खाकवानी मुल्तानी, बदर 14 मार्च सन् 1907 ई., इसके अतिरिक्त देखें हक़ीक़तुल वह्यी)

17. हज़रत शेख मुहीउद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाह (देहान्त सन् 628 हिजरी) ने फ़रमाया :-

وَيَكُوْنُ ظُهُوْرُهٗ بَعْدَ مَضِيِّ خ ف ج بَعْدَ الْهِجْرَةِ۔

(مقدمہ ابن خلدون صفحہ 354 ترجمہ از مولانا سعد حسن خان صاحب یوسفی فاضل الٰہیات اصح المطابع، کراچی)

अर्थात इमाम महदी का प्रकटन हिजरत के बाद ख, फ, ज, के गुज़रने पर होगा। हिजरत के वर्णाक्षर (हि+ज+र+त) = (5+3+200+400) की संख्या 608 और ख+फ+ज= (600+80+3) की संख्या 683 बनती है मानो महदी का प्रकटन 608+683=1291 हिजरी में होगा।

18. हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैहि (देहान्त 561 हिजरी) का एक महत्वपूर्ण कश्फ है :-

''एक दिन आलमे जिन्न व इन्स (अर्थात समस्त मानव जगत) की पेशवाई में हज़रत सैयद अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैहि किसी जंगल में ख़ुदा पर ध्यान लगाए बैठे थे। अचानक आसमान पर एक महत्वपूर्ण नूर प्रकट हुआ जिससे सारी दुनिया रोशन हो गई। यह नूर ساعةً فساعةً (पल पल) बढ़ता और रोशन होता गया। उससे दयनीय उम्मत के अगले और पिछले औलियाओं ने रोशनी हासिल की। हज़रत ने विचार किया कि इस मिसाल में किसी सिद्धपुरुष को दिखाया गया है। दिल में बात डाली गई कि यह नूर वाला तमाम् उम्मतों के अगले पिछले औलियाओं से बढ़कर है। पाँच सौ वर्ष बाद पैदा होकर हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म को ताज़ा करेगा। जो उसकी सत्संगति से लाभान्वित होगा वह सौभाग्यशाली होगा। उसके बेटे और ख़लीफ़ा खुदा के निकट बहुत बड़ा स्थान पाने वालों में से हैं।

(हदीक़-ए-महमूदिया अनुवाद रौज़ा कय्यूमिया, पृष्ठ 32)

हदीक़:-ए- महमूदिया में इस कश्फ को बारहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद के बारे में बताया गया है। किन्तु इस कश्फ में पाँच सौ वर्ष के बाद पैदा होने वाले मुजद्दिद-ए-दीन को सारी उम्मतों के अगलों और पिछलों से श्रेष्ठ ठहराया गया है। इसलिए यह स्थान हमारे निकट खात्मुल खुलफा (अर्थात सब मुजद्दिदों के शिरोमणि) हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ही हो सकता है न कि बारहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद रहमतुल्लाह अलैहि का।

19. हुजजुल किरामा के लेखक ने समस्त अनुमानों के अनुसार इमाम महदी अलैहिस्सलाम के चौदहवीं हिजरी शताब्दी

के प्रारंभिक काल में प्रकट होने की पूरी संभावना वर्णन की है :-

بر ہر تقدیر ظہور مہدی، بر سر صد آئندہ احتمال قوی دارد۔
(حجج الکرامہ صفحہ 52)

20. हज़रत बाबा गुरूनानक रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं :-

''आवन अठहत्तरे जान सत्तानवे होर भी उठ सी मर्द का चेला।'' (ग्रन्थ साहिब तंग मुहल्ला पृष्ठ 137)

अर्थात पूर्ण सिद्धपुरुष (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो पूर्णत: पवित्र और पूर्ण मार्गदर्शक हैं) का एक पूर्ण शिष्य पैदा होगा जब सम्वत् 1878 आएगा और सम्वत 1897 बीत जाएगा अर्थात 1821 ई. से 1840 ई. के मध्य आने वाला, पूर्ण सिद्धपुरुष का शिष्य कहलाएगा।

21. इस्ना अशरी के कुछ लोगों का विचार है कि :-

''उन्नीसवीं या बीसवीं शताब्दी ईसवी का आरम्भकाल ही इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव का ज़माना है। सन् 1912 ई. का ज़माना ऐसा ज़माना है जो (आध्यात्मिक रूप से) खुदा के युद्ध स्तर कानून की शुरूआत का इच्छुक है। इस समय ऐसी ताक़त की आवश्यकता है जो मशीनों की खुदाई को तोड़े, जिस्म परस्ती को मिटाए। मनुष्य को जिस्म परस्ती से छुटकारा दिलाकर आध्यात्मिकता के क्षेत्र में लाए... इस्लाम की परिभाषा में यही ताकत श्री इमाम अलैहिस्सलाम है।''

(पत्रिका ''बुरहान'' नवम्बर सन् 1912 ई., पृष्ठ 47-52)

22. शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब रहमतुल्लाह अलैहि ने तोहफा इस्ना अशरिया में लिखा है कि :-

''बारह सौ हिजरी के बाद हज़रत महदी की प्रतीक्षा करनी चाहिए और शताब्दी के प्रारंभिक काल में श्रीमान का जन्म है।'' (अरबईन फी अहवालिल महदीयीन मुद्रित मिस्रीगंज कलकत्ता

सन् 1268 हिजरी लेखक हज़रत सैयद इस्माईल शहीद रह. का आखिरी भाग)

23. शेख अली अस्ग़र अलबरूजरवी जिन्हें बड़ी-बड़ी उपाधियाँ दी गई हैं और जो बहुत सी किताबों के लेखक भी हैं। अपनी किताब ''नूरुल अनवार'' में ''कैफीयात-ए-महदी अलैहिस्सलाम'' के शीर्षक से लिखते हैं :-

اندر صرغی اگر بمانی زنده
ملک و ملّت و دیں بر گردد
(صفحہ 215)

कि साल-ए-सरग़ी में अगर तो जीवित रहा तो देश, शासन और जनता एवं धर्म में परिवर्तन आ जाएगा। अरबी वर्णाक्षर अब्जद की गणना के अनुसार सरग़ी की संख्या 1290* हिजरी बनती है। (इमाम महदी का ज़हूर पृ. 417)

24. ख्वाजा हसन निज़ामी साहिब वर्णन करते हैं कि :-

''हज़रत इमाम इब्ने अरबी रहमतुल्लाह अलैहि ने सन् 1335 हिजरी में महदी के प्रादुर्भाव की भविष्यवाणी की है।''

(महदी के अन्सार और उनके फराइज़ पृष्ठ 39)

25. मौलवी हमीदुल्लाह साहिब मुल्ला सवात लिखते हैं कि मैं आयत :-

وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ

के आदेशानुसार खुदा तआला की क़सम खाकर लिखता हूँ कि हज़रत साहिब कोठ वाले अपनी मृत्यु से एक दो वर्ष पहले अर्थात् सन् 1292 हिजरी या 1293 हिजरी में अपने विशिष्ट लोगों में बैठे हुए थे और हर एक ओर से ज्ञान और रहस्यों में बातचीत हो रही थी। अचानक महदी माहूद का वर्णन बीच में

* संभवत: यह संख्या भूल वश लिखी गई है स्पष्टत: यह संख्या 1300 बनती है - अनुवादक

आ गया। कहने लगे कि महदी माहूद पैदा हो गया है किन्तु अभी प्रकट नहीं हुआ है। ख़ुदा की क़सम यही उनके शब्द थे और मैंने सच-सच बयान किया है न कि स्वार्थ से और सच को प्रकट करने के अतिरिक्त अन्य कोई इच्छा मध्य नहीं। उनके मुँह से यह शब्द अफ़गानी भाषा में निकले थे।

چہ مہدی پیدا شوے دے ۔وقت ظہور ندے۔

अर्थात महदी मौऊद पैदा हो गया है लेकिन अभी प्रकट नहीं हुआ। (तोहफा गोलड़विया, पृष्ठ 37)

26. जनाब सैयद मीर अब्दुल हई साहिब ''हदीसुल ग़ाशिया'' में लिखते हैं कि :-

''इमाम महदी अलैहिस्सलाम चौदहवीं शताब्दी हिजरी के सातवे वर्ष में प्रकट होंगे जो कि सन् 1307 हिजरी अर्थात सन् 1889 ई. का समय है।''

27. ख्वाजा हसन निज़ामी साहिब ने सन् 1912 ई. में कहा कि :-

''महदीवियत का सूरज निकलने के इतना निकट आ गया है कि उसकी किरणें नज़र आने लगी हैं।''

(महदी के अन्सार और उनके फराइज़, पृष्ठ 20)

28. नूरुल अनवार के लेखक ने लिखा कि :-

''अब सन् 1274 हिजरी है कि यह सारी निशानियाँ पूर्ण रूप से पूरी हो चुकी हैं बल्कि कई गुना अधिक।'' (पृष्ठ 139)

अर्थात महदी के प्रादुर्भाव की सारी निशानियाँ पूरी हो गई हैं और सन् 1274 हिजरी तेरहवीं शताब्दी हिजरी का अन्तकाल है इससे स्पष्ट है कि अब प्रादुर्भाव का समय निकट है।

29. पत्रिका ''अंजुमन ताईदे इस्लाम'' के एक लेख में लिखा गया कि :-

''हदीसों में मरियम व इब्नि मरियम का नाम आया है कि

वह शताब्दी के प्रारंभिक काल में प्रकट होगा और चौदहवीं शताब्दी हिजरी का मुजद्दिद होगा।''

(अन्जुमन ताईदे इस्लाम अप्रैल सन् 1920 ई. पृष्ठ 12)

30. हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैहि के मशहूर क़सीदा बनाम تحفة المهتدين في بيان اسماء المجدّدين ''तोहफतुल मुहतदीन फी बयान अस्माउल मुजद्ददीन'' की व्याख्या में शेख मुहम्मद बिन अलजरजावी अलमालिकी ने एक अरबी क़सीदा लिखा। इस प्राचीन अरबी क़सीदा पर आधारित किताब हाथ से लिखी हुई है और मिस्र सरकार की सरकारी लाइब्रेरी काहिरा में सुरक्षित है। जो मिस्र की राजधानी है। इसमें तेरह शताब्दियों के मुजद्दिदीन के वर्णन के बाद शेख अलजरजावी ने चौदहवीं शताब्दी के बारे में एक आश्चर्यजनक अर्थपूर्ण शैर लिखा है :-

وَاٰخِرُ الْمِئَتَيْنِ فِيْهَا يَأْتِيْ
عِيْسٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ ذو الْاٰيَاتِ
يُجَدِّدُ الدِّيْنَ لِهٰذِهِ الْاُمَّةِ
وَفِي الصَّلٰوةِ بَعْضُنَا قَدَامَةِ

अर्थात चौदहवीं हिजरी शताब्दी में चमत्कार दिखलाने वाला अल्लाह का रसूल ईसा इस उम्मत के धर्म का सुधार करेगा और नमाज़ में हम में से कोई उसके आगे खड़ा होगा।

(इमाम महदी का ज़हूर पृष्ठ 220)

31. रसूलुल्लाह के स्थान पर नबीउल्लाह शब्द लिखकर नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहिब ने हुजजुल किरामा पृष्ठ 138 पर निम्नलिखित शैर लिखा है कि :-

عِيْسٰى نَبِيُّ اللّٰهِ ذُو الْاٰيَاتِ
يُجَدِّدُ الدِّيْنَ لِهٰذِهِ الْاُمَّةِ

अर्थात अल्लाह के नबी ईसा निशानों और चमत्कारों के साथ प्रकट होंगे और इस उम्मत के धर्म का सुधार करेंगे।

32. قاضی ثناء اللہ پانی پتی در سیف مسلول گفتہ۔ ظہور اُو بظن و تخمین علماء ظاہر و باطن در اوائل سیز دہم از ہجرت گفتہ اند۔ (حجج الکرامہ صفحہ 394)

अर्थात काज़ी सनाउल्लाह साहिब पानीपती ने अपनी किताब सैफे मसलूल में लिखा है कि इमाम महदी का प्रादुर्भाव समस्त उलमा के विचार और अनुमानों के अनुसार तेरहवीं शताब्दी हिजरी का प्रारंभिक काल है।

33. क़ुरआन करीम की सूर: अल् सफ़्फ़ में लिखा है कि :-

يُرِيۡدُوۡنَ لِيُطۡفِـُٔوۡا نُوۡرَ اللّٰهِ بِاَفۡوَاهِهِمۡ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوۡرِهٖ۔

अर्थात वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह की फूकों से बुझा दें हालाँकि अल्लाह अवश्यमेव अपने नूर की चमकार को पूरा करने वाला है।

इस आयत को बयान करके वर्णनकर्ता ने कहा :-

بِالۡقَائِمِ مِنۡ اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلَوٰتُ اللّٰهِ عَلَيۡهِمۡ اِذَا خَرَجَ۔

कि आले मुहम्मद के अल् क़ाइम इमाम महदी अलैहिस्सलाम के द्वारा अल्लाह तआला अपने नूर को समस्त संसार में फैला देगा।

(अन्नजमुस्साक़िब भाग 1, पृष्ठ 24, बिहारुल अनवार भाग 13, पृष्ठ 13)

*- इस आयत में क़ाइम आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (इमाम महदी अलैहिस्सलाम) के द्वारा नूर को पूरा करने का वर्णन है और स्पष्ट है कि नूर का पूरा होना चाँद की चौदहवीं रात में होता है इस से स्पष्ट होता है कि इमाम महदी चौदहवीं हिजरी शताब्दी में आएगा। क्योंकि एक दिन का उदाहरण एक शताब्दी से व्यापक रूप से सर्वमान्य है।

(तोहफा गोलड़विया)

34. पवित्र आयत :-

وَاِنَّ يَوۡمًا عِنۡدَ رَبِّكَ كَاَلۡفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ۔ **(سورة الحج:48)**

की व्याख्या में कई विद्वानों का कथन शिया फ़िर्क़ा की विश्वस्त किताब ग़ायतुल मक़्सूद भाग 2, पृष्ठ 81 पर वर्णन किया गया है :-

مراد از ہزار سال انشاء اللہ تعالیٰ قوّت سلطان شریعت است۔
تا تمام شُدن ہزار آنگاہ شروع می کُند در اضمحلال تا آنکہ میگر
ددین غریب۔چنانچہ در ابتداء بود وے باشد ۔اوّل ایں اضمحلال
از گزشتن سی سال از قرن ِیاز دہم و دراں وقت مترتب است
خروج ِمہدی علیہ السلام۔

अर्थात एक हज़ार से तात्पर्य शरीअत के गल्बा का ज़ोर है। एक हज़ार वर्ष बीतने के पश्चात् इस्लाम धर्म में पतन प्रारंभ हो जायेगा। यहाँ तक कि अन्ततः इस्लाम बहुत कमज़ोर और दयनीय हो जाएगा और इस कमज़ोरी का प्रारंभ ग्यारहवीं हिजरी शताब्दी के तीस वर्ष बीतने के पश्चात प्रारंभ होगा। तभी से इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव की प्रतीक्षा प्रारंभ हो जाएगी।

(घ) कुछ अन्य धर्मों के विद्वानों के कथन

अनुमान और आस्थाओं की दृष्टि से

समस्त धर्मों के लोग आख़िरी युग में आने वाले एक कथित अवतार का वर्णन करते आए हैं। अधिकतर लोगों की आस्था अपने ही नबी या पेशवा के पुनर्जन्म के रूप में आने की थी। फिर भी उनके निकट (मसीह या कृष्ण इत्यादि के पुनर्जन्म के रूप में) उस कथित अवतार के प्रकट होने का समय चौदहवीं शताब्दी हिजरी ही बनता है।

1. पुराने अहदनामा की किताब दानियेल में आख़िरी युग के बारे में हज़रत दानियेल पर हुई एक ईशवाणी का वर्णन है जिसमें

खुदा ने कई बातों के रहस्य को प्रकट किया। उसमें लिखा है कि :-

''एक हज़ार दो सौ नब्बे दिन होंगे। सौभाग्यशाली है वह जो प्रतीक्षा करता है और एक हज़ार तीन सौ पैंतीस दिन तक आता है।'' (दानियेल 12/12-9)

2. मशहूर ईसाई स्कालर मिस्टर जे. बी. डिम्बल अपनी किताब The Appointed Time मुद्रित लन्दन सन् 1896 ई. के पृष्ठ 16 पर लिखते हैं :-

The new era all the nine methods in both diagrams is 5896 1/2 our 1898 1/4

अर्थात सब धार्मिक ग्रन्थों और नियमों की दृष्टि से नया युग (मसीह के आगमन का) आदम से 5896 1/2 वर्ष है। जो हमारी गणित से ईसवी सन् में 1898 1/4 ई. है।

3. ईसाई अन्वेषकों का एक बोर्ड कई धार्मिक ग्रन्थों और भविष्यवाणियों पर सोच-विचार करता रहा और फिर सन् 1884 ई. में ''मिल्लीनल दान'' नामक एक किताब प्रकाशित की जिसमें अत्यधिक सोच विचार के बाद मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव सन् 1873 ई. ठहराया गया और कहा गया कि वह सन् 1914 ई. तक अपने पुनीतात्माओं को एकत्र करता रहेगा।

4. एक और ईसाई स्कालर ने लिखा है :-

''सिद्धपुरुषों के बिना सोसाइटी चरमोत्कर्ष तक नहीं पहुँच सकती। ...हमें शिक्षक भी चाहिए और पैग़म्बर भी... सम्भवत: हमें एक मसीह की आवश्यकता है।'' (इक़्बालनामा पृष्ठ 462-463, संकलनकर्ता शेख अताउल्ला साहिब एम.ए., अर्थ शास्त्र विभाग, अलीगढ़)

5. बाबा गुरू नानक रहमतुल्लाह अलैहि जिनको सिख लोग

अपने धर्म का संस्थापक समझते हैं ने कहा :-

''आवन अठहत्तर जावन सतानवे होर भी उठ सी मर्द का चेला।'' (ग्रन्थ साहिब, तंग मुहल्ला पृष्ठ 137)

अर्थात सम्वत 1878 से सम्वत 1897 या सन् 1821 ई. से 1840 ई. तक का अन्तराल वह समय है जब एक विशेष सिद्ध और साहसी पुरुष का शिष्य प्रकट होगा।

6. मुसलमान तो इमाम महदी का आगमन चौदहवीं हिजरी शताब्दी के प्रारम्भिक काल में मानते हैं।

स्वामी भोलानाथ जी आने वाले अपने कथित अवतार को इसी अस्तित्व में स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि :-

''हिन्दू कहते हैं कि वह पूर्ण ब्रह्म निष्कलंक अवतार धारण करेंगे। मुसलमानों का विश्वास है कि इमाम महदी का प्रादुर्भाव होगा। सिक्खों का विश्वास है कि कल्कि अवतार होगा और ईसाई कहते हैं कि हज़रत ईसा ईश्वर से एक होकर पधारेंगे। परन्तु अब यह जानना शेष है कि सारी सत्ताएँ पृथक-पृथक होंगी या एक ही ! इसका उत्तर यह है कि नहीं, ये एक ही होंगी। हिन्दू उसे अपनी दृष्टि से देखेंगे। मुसलमान अपनी से, सिक्ख या ईसाई उसे अपनी दृष्टि से देखेंगे।''

(अखबार सत्युग सितम्बर सन् 1941 ई. पृ. 13)

7. تاں مردانے پُچھیا گورو جی ! بھگت کبیر جہیاکوئی ہور بھی ہوئیااے؟سری گورو نانک جی آکھیا ،مردانیاں! اک جٹیٹا ہوسی ۔پر اساں توں پچھّے سو برس توں بعد ہوسی۔

(جنم ساکھی بھائی بالا والی وڈی ساکھی صفحہ 251)

(مطبوعہ مفید عام پریس منشی گلاب سنگھ اینڈ سنز)

अनुवाद :- तब मरदाना ने पूछा, गुरू जी! भगत कबीर जैसा कोई और भी हुआ है? श्री गुरू नानक जी ने उत्तर

दिया, एक जाट (किसान) होगा पर हम से सौ वर्ष बाद होगा। (अनुवादक)

''असाँ तो बाद'' के बहुवचन शब्द से स्पष्ट है कि सब गुरुओं के सौ वर्ष बाद वह कथित अवतार आएगा। आख़िरी गुरु गोबिन्द सिंह औरंगज़ेब आलमगीर के काल में आए और उससे ठीक सौ वर्ष गुज़रने पर चौदहवीं शताब्दी हिजरी में इमाम महदी का प्रादुर्भाव होना निश्चय था।

8. ईसाइयों में बहुत सी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनमें लिखा है कि मसीह के प्रादुर्भाव का युग उन्नीसवीं शताब्दी ईसवी का अन्तकाल और बीसवीं शताब्दी ईसवी का प्रारम्भिक काल है अर्थात तेरहवीं हिजरी शताब्दी का अन्त और चौदहवीं हिजरी शताब्दी का प्रारंम्भिक काल। कुछ पुस्तकें और अखबार अधिक प्रसिद्ध हैं। उदाहरणत: -

(1) 'हिजग्लोरिस एपीयरिंग', मुद्रित लन्दन सारी पुस्तक का यही शीर्षक है।

(2) 'क्राइस्ट्स सेकण्ड कमिंग', मुद्रित लन्दन, पृष्ठ 15

(3) दि कमिंग आफ दि लार्ड', मुद्रित लन्दन, पृष्ठ 1

(4) अखबार 'फ्री थिंकर', लन्दन 7 अक्तूबर सन् 1900 ई.

द्वितीय खण्ड

इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव का क्षेत्र पूरब + हिन्दुस्तान

तेरहवीं शताब्दी हिजरी काल में समस्त धर्मों के शास्त्रार्थ का दंगल हिन्दुस्तान में पूरे चरमोत्कर्ष पर था। इसलिए इमाम महदी के प्रादुर्भाव के लिए यही देश सर्वाधिक उचित था। जहाँ अन्य धर्मों के अतिरिक्त मुसलमानों के समस्त फ़िर्क़े भी मौजूद थे। जल-थल के उपद्रव अपनी चरमसीमा को छू रहे थे। जिन्हें दूर करना इमाम महदी के अनिवार्य कर्तव्यों में से था। उपचारक उसी जगह आता है जहाँ रोगी हों। बहुत सी हदीसों भविष्यवाणियों और शुभसूचनाओं में भी आने वाले का प्रादुर्भाव पूरब या हिन्दुस्तान में बताया गया है।

1. قَالَ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسلّمَ فَبَيْنَمَا كَذٰلِكَ إِذْ بَعَثَ اللهُ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ فَيَنْزِلُ عِنْدَ الْمَنَارَةِ الْبَيْضَآءِ شَرْقِيَّ دِمَشْقَ۔

(مسلم جلد 2 کتاب الفتن باب ذکر الدجّال)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दज्जाल के निकलने का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि उसी समय अल्लाह तआला मसीह इब्ने मरियम को भेजेगा और वह दमिश्क से पूरब की ओर सफेद मीनार के पास उतरेंगे।

इस हदीस से तात्पर्य यह है कि दमिश्क से पूरब की ओर मसीह का प्रादुर्भाव होगा स्पष्टत: दमिश्क में नहीं। इसीलिए प्रादुर्भाव से संबंधित किसी विशेष स्थान के बारे में प्रारम्भ से मतभेद रहा है। अत: हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने कहा है कि हदीसों

में मसीह के प्रादुर्भाव के लिए कई स्थानों का वर्णन है।
(हाशिया इब्ने माजा जिल्द-2, भाग फित्नतुद्दज्जाल व खुरूज ईसा)

2. عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عِصَابَۃٌ تَغْزُو الْھِنْدَ وَھِیَ تَکُوْنُ مَعَ الْمَھْدِیِّ اسْمُہٗ اَحْمَدُ

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक जमाअत हिन्दुस्तान में (इस्लाम के विरोधियों से) जिहाद करेगी और वह महदी के साथ होगी। उस महदी का नाम अहमद होगा। (रिवाहुल बुखारी फी तारीखिही)

3. قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَخْرُجُ نَاسٌ مِنَ الْمَشْرِقِ فَیُوْطِئُوْنَ الْمَھْدِیَّ یَعْنِی سُلْطَانَہٗ

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि पूरब से ऐसे लोग निकलेंगे जो महदी की जगह बताएँगे जो उनका बादशाह होगा। अर्थात उसका समर्थन करेंगे और उसके काम में मदद देंगे।
(बिहारुल अनवार जिल्द 13, पृष्ठ 21, अबू दाऊद जिल्द 2, भाग खुरुजुल महदी, इब्ने माजा मिस्री, पृष्ठ 519)

4. قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عِصَابَتَانِ مِنْ اُمَّتِیْ اَحْرَزَھُمَا اللّٰہُ مِنَ النَّارِ عِصَابَۃٌ تَغْزُو الْھِنْدَ وَعِصَابَۃٌ تَکُوْنُ مَعَ عِیْسَی ابْنِ مَرْیَمَ عَلَیْہِ السَّلَامُ۔

(مسند احمد بن حنبل جلد 5 صفحہ 78 و نسائی جلد 2 صفحہ 52 باب غزوۃ الھند)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दो गिरोह हैं जिनको ख़ुदा तआला ने आग (नर्क) के अज़ाब से बचा लिया। उनमें से एक गिरोह तो वह है जो हिन्दुस्तान में शिर्क के खिलाफ जिहाद करेगा और एक गिरोह ईसा अलैहिस्सलाम के साथ होगा।

इस हदीस में वस्तुत: हिन्दुस्तान में होने वाली दो जमाअतों का वर्णन है। शिर्क के खिलाफ जिहाद करने वाली जमाअत वह पहली इस्लामी जमाअत है जिसके द्वारा हिन्दुस्तान में मुसलमानों के लिए सफलता की नींव रखी गई थी और दूसरी जमाअत मसीह मौऊद अर्थात इमाम महदी के साथ होना बयान हुई है जिसके युद्ध करने का कोई वर्णन नहीं।

5. وَاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ وَ فِی الْمَجْمَعِ عَنِ الْبَاقِرِ هُمُ الْاَعَاجِمُ وَمَنْ لَّا یَتَکَلَّمُ بِلُغَةِ الْعَرَبِ۔ قَالَ وَ رُوِیَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَرَءَ هٰذِهِ الْاٰیَاتِ فَقِیْلَ لَهٗ مَنْ هٰٓؤُلَآءِ فَوَضَعَ یَدَهٗ عَلٰی کَتفِ سَلْمَانَ وَ قَالَ لَوْ کَانَ الْاِیْمَانُ فِی الثُّرَیَّا لَنَالَهٗ رِجَالٌ مِنْ هٰٓؤُلَآءِ۔ (تفسیر صافی زیر آیت مذکور سُورة الجمعه وتفسیر مجمع البیان جلد 3 صفحه 425 و تفسیر عمدة البیان جلد 2 صفحه 565)

अर्थात आयत व आख़रीना मिनहुम के अन्तर्गत मज्मउल बयान में इमाम बाकर से रिवायत है कि वे (आख़रीन लोग) अरबी नहीं हैं और वे अरबी भाषा में बातचीत नहीं करेंगे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत की गई है कि जब आप स.अ.व. ने यह आयत पढ़ी तो आप स.अ.व. से पूछा गया कि यह कौन लोग हैं ? आपने अपना हाथ सलमान (फारसी) रज़ियल्लाहु अन्हु के कन्धे पर रखकर कहा कि अगर ईमान सुरैया पर भी हो तो कई आदमी इनमें से (अर्थात फारसियों में से) उसे पा लेंगे। फारस का देश भी पूरब में है।

6. आज़ाद बिलग्रामी अपनी किताब ''सब्हतुल मर्जान'' में अल्लामा सुयूती इब्ने जरीर, हाकिम, बेहकी और इब्ने असाकर के हवाले से लिखते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि :-

''सबसे पवित्र और सुगंधित स्थान हिन्दुस्तान है क्योंकि यहाँ

आदम अलैहिस्सलाम अवतरित हुए और यहाँ के वृक्षों में जन्नत की सुगन्ध का असर है। इसके अतिरिक्त लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे हिन्दुस्तान की ओर से रब्बानी खुशबू आती है।'' ('हिन्दुस्तान के अहद वस्ती की एक झलक', लेखक सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान एम.ए., मुद्रित नदवतुल मुसन्निफीन, दिल्ली सन् 1958 ई.)

7. शिया लिटरेचर में जिन लोगों ने इमाम महदी को देखने और मुलाकात करने का दावा किया है, अबू सईद खानम हिन्दी उनमें से एक मशहूर आदमी हैं। उन्होंने कश्फ में हज़रत इमाम महदी से मुलाकात की, जिन्होंने हिन्दुस्तानी भाषा में बातचीत की और हाल पूछा। पूरा कश्फ बयान करके अन्त में फरमाते हैं :-

كُلُّ ذٰلِكَ بِكَلَامِ الْهِنْدِ۔

(صافی شرح اصول کافی کتابُ الحجّة)

(باب مولد صاحب الزمان۔ جزء سوم حصّه دوم صفحه 304)

इस कश्फ से स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि आने वाला महदी हिन्दुस्तान में आएगा। (इमाम महदी का ज़हूर पृष्ठ 363)

8. एक रिवायत में है कि महदी कादिआ बस्ती से निकलेगा।

يَخْرُجُ الْمَهْدِيُّ مِنَ الْقَرْيَةِ يُقَالُ لَهَا كَدْعَةٌ۔

(جواهر الاسرار صفحه 56)

9. एक रिवायत में है कि महदी खरासान से आएगा। (मुस्नद अहमद बिन हम्बल, कन्ज़ुल उम्माल जिल्द 7, पृष्ठ 186, हुजजुल किरामा पृष्ठ 358)

10. एक रिवायत में है कि महदी कहतान से पैदा होगा।

(कन्ज़ुल उम्माल जिल्द 7, पृष्ठ 188)

उपरोक्त तीनों रिवायतें अवतरणों सहित पुस्तक 'इमाम महदी का ज़हूर' लेखक कुरैशी मुहम्मद असदुल्लाह साहिब काश्मीरी पृष्ठ 15 पर लिखी हैं और तीनों से एक ही बात स्पष्ट होती है कि

महदी पूरब की ओर से प्रकट होगा।

11. لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقاً بِالثُّرَيَّا لَنَالَهُ رَجُلٌ اَوْ رِجَالٌ مِّنْ هٰؤُلَآءِ۔ (بخاری کتاب التفسیر ۔سورۃ الجمعۃ)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब ईमान उठ जाएगा तो पुन: क़ायम करने वाला कथित अवतार फारसी लोगों में से आएगा और यह भी वस्तुत: फारस के क्षेत्र अर्थात पूरब की ओर संकेत है।

12. عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْرُجُ الْمَهْدِيُّ مِنْ قَرْيَةٍ يُقَالُ لَهَا كَرْعَةَ۔

(بحار الانوار جلد 13 صفحہ 23)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि महदी करआ नामक बस्ती से प्रकट होगा। सम्भवत: करआ वस्तुत: कदआ है और कदआ से तात्पर्य क़ादियान (पूर्वी पंजाब) है जो वस्तुत: 'इस्लामपुर काज़ी' था फिर कादी या कादीं के नाम से मशहूर रहा। इस तरह कदआ वस्तुत: कादियान का ही परिवर्तित नाम है।

13. ثُمَّ يَجِيْئُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ مِنَ الْمَغْرِبِ وَ لَفْظُ الطِّبْرَانِىْ مِنَ الْمَشْرِقِ۔ (تفسیر درّ منثور جلد21صفحہ 242)

फिर ईसा इब्ने मरियम पच्छिम से प्रकट होंगे और हदीस तिबरानी में 'पूरब से' के शब्द हैं।

14. ख़ुदा में लीन जमालपुर के मशहूर सूफी बुज़ुर्ग हज़रत ग़ुलाब शाह ने सन् 1278 हिजरी में खबर दी कि 'ईसा जो आने वाला था वह पैदा हो गया है और क़ादियान में है'

(निशाने आसमानी, पृष्ठ 21)

15. हाफिज़ मुहम्मद यूसुफ साहिब ज़िलेदार नहर ने कई बड़े-बड़े जलसों में बयान किया कि हज़रत मौलवी अब्दुल्ला

ग़ज़नवी रहमतुल्लाह ने फ़रमाया, कि आसमान से एक नूर क़ादियान पर गिरा और मेरी सन्तान उससे बेनसीब रह गई।''

(तोहफा गोलड़विया पृष्ठ 13)

16. हज़रत मौलाना रोमी रहमतुल्लाह अलैहि ने मस्नवी में फ़रमाया है कि :-

گفت دانائے برائے داستاں
کہ درختے ہست در ہندوستاں

कि एक दाना (अर्थात बुद्धिमान - अनुवादक) ने उदाहरण के तौर पर कहा कि हिन्दुस्तान में एक ऐसा वृक्ष है जिसका मेवा खाने वाला न बूढ़ा होता है और न उसे मौत आती है। बादशाह यह बात सुनकर हिन्दुस्तान के इस वृक्ष पर मंत्रमुग्ध हो गया। फिर बादशाह को एक दर्वेश[1] मिला जिसने व्याख्या की कि वृक्ष से तात्पर्य ज्ञान है जो बहुत उच्च और व्यापक और जीवन का पानी है। तू मूर्ख है जो आकृति पर ध्यान देता है और अर्थों से अनभिज्ञ है। कभी उसका नाम वृक्ष है कभी सूरज कभी समुद्र और कभी बादल।

صد ہزاراں نام و آں یک آدمی
صاحب ہر وصفش از وصفے عمی

अर्थात यद्यपि वह अकेला पुरुष है लेकिन उसके लाखों नाम हैं। फिर आगे व्याख्या करते हुए और उस पुरुष की विशेषताएँ वर्णन करते हुए अन्त में दर्वेश ने कहा :-

گفت خود خالی نبود است امّتے
از خلیفۂ حق و صاحب ہمّتے

कोई क़ौम ख़ुदा तआला के नबी अवतार और सिद्धपुरुष से खाली नहीं।

(मस्नवी मौलाना रोम रहमतुल्लाह दफ़्तर 2, पृष्ठ 181-182)

इस वृक्ष से तात्पर्य वस्तुत: वही इमाम महदी अलैहिस्सलाम

1. अर्थात वली (सिद्धपुरुष) - अनुवादक।

है जिसने कहा :-

''एक शजर हूँ जिसको दाऊदी सिफ़्त के फल लगे।''

और अपने अनगिनत नामों की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया :-

''मैं कभी आदम कभी मूसा कभी याकूब हूँ
नीज़ इब्राहीम हूँ नस्लें हैं मेरी बे शुमार''

17. एक मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत साहिब कोठ वाले (जिनका देहान्त 1294 हिजरी में हुआ था) ने एक दिन फ़रमाया :-

''महदी आख़िरुज़्ज़मान पैदा हो गया है अभी उसका प्रकटन नहीं हुआ। जब उनसे पूछा गया कि उसका नाम क्या है ? तो फ़रमाया कि नाम नहीं बतलाऊँगा। परन्तु इतना बतलाता हूँ कि भाषा उसकी पंजाबी है।''

यह रिवायत हज़रत साहिब कोठ वाले के बहुत ही सद्भावक विश्वस्त अनुयायियों ने बयान की है।

(विस्तारपूर्वक देखें - 'तोहफ़ा गोलड़विया', पृष्ठ 34-38)

18. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, फ़रमाया :-

رَجُلٌ مِنْ اٰلِ مُحَمَّدٍ يَظْهَرُ بِا لْمَشْرِقِ وَ تُوْجَدُ رِيْحُهَابِالْمَغْرِبِ
كَالْمِسْكِ يَسِيْرُ الرُّعْبُ اَمَامَهَا بِشَهْرٍ۔

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों में से एक व्यक्ति पूरब से प्रकट होगा और उसकी हवा कस्तूरी की तरह पश्चिम में फैल जाएगी और एक माह उसके आगे-आगे रौब चलता होगा। (बिहारुल अनवार जिल्द 13, पृष्ठ 173)

कुछ अन्य धार्मिक पुस्तकों के उद्धरण

1. बाइबल में पुरातन से एक भविष्यवाणी है जिसमें आने वाले कथित अवतार के पूरब से प्रकट होने का वर्णन है कि :-

اُنْصُتِيْ اِلَيَّ اَيَّتُهَا الْجَزَائِرُ وَلْتُجَدِّدِ الْقَبَائِلُ قُوَّةً لِيَقْتَرِبُوْا ثُمَّ يَتَكَلَّمُوْا لِنَتَقَدَّمَ مَعًا اِلَى الْمُحَاكَمَةِ مَنْ اَنَضَّ مِنَ الْمَشْرِقِ الَّذِيْ يُلَاقِيْهِ النَّصْرُ عِنْدَ رِجْلَيْهِ۔ (عربی بائیبل یسعیاہ نبی کی کتاب 41/1-2، مطبوعہ 1871ء آکسفورڈ)

हे द्वीप समूहो ! खामोश रहो और समस्त जनसमूह पुन: साहस पैदा करें और पास आकर कहें कि आओ हम मिलकर न्याय के लिए पास जाएँ। किसने पूरब से उसको प्रकट किया, मदद आकर जिसके क़दम चूमती है।

2. इन्जील में लिखा है :-

''जैसे बिजली पूरब से आकर चमक कर पश्चिम तक दिखाई देती है वैसे ही इब्ने आदम का आना होगा।''

(मती बाब 24 आयत 27)

इसमें मसीह के पुन: आने का वर्णन है जो इमाम महदी के रूप में प्रकट होना निर्धारित था और यहाँ उसका पूरब से प्रकट होना स्पष्ट है।

3. सिख धर्म के प्रवर्तक हज़रत बाबा गुरू नानक रहमतुल्लाह अलैहि का वर्णन है :-

تاں مردانے پچھیا گوروجی! بھگت کبیر جیہاکوئی ہور بھی ہوئیا اے؟سری گورو نانک جی آکھیا مردانیاں!اک جٹیٹا ہو سی ۔پر اساں تو پچھے سو برس توں بعد ہو سی ۔پھر مردانے پچھیا،جی! کیہڑی تھائیں اَتے ملک وچ ہوسی ؟تاں گورو جی نے کہیا، مردانیاں!وٹالے دے پرگنے وچ ہوسی۔

(جنم ساکھی بھائی بالا والی وڈی ساکھی صفحہ 251
مطبع مفید عام پریس منشی گلاب سنگھ اینڈ سنز)

इसमें कथित अवतार के तहसील बटाला ज़िला गुरदासपुर पूर्वी पंजाब में आने का वर्णन है।

तृतीय खण्ड

इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव के समय की निशानियाँ

हज़रत मुहम्मद मुस्तफा अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आने वाले अपने महदी के प्रादुर्भाव के समय के बारे में बहुत सी निशानियाँ बयान की हैं। जिन पर ध्यान देकर एक सच्चाई को ढूँढने वाला असल सच्चाई तक आसानी से पहुँच सकता है। उनमें से एक पूर्णत: स्पष्ट और महत्वपूर्ण निशान, निर्धारित समय पर सूरज चाँद को ग्रहण लगना है।

कुसूफ और खुसूफ (अर्थात सूर्य–चन्द्र ग्रहण) का वर्णन

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

اِنَّ لِمَهْدِيِّنَا اٰيَتَيْنِ لَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَنْكَسِفُ الْقَمَرُ لِاَوَّلِ لَيْلَةٍ مِّنْ رَّمَضَانَ وَ تَنْكَسِفُ الشَّمْسُ فِى النِّصْفِ مِنْهُ۔ (سنن دار قطنى صفحه 188 باب صفة صلٰوة الخسوف والكسوف وهيئتهما ۔مطبع فاروقى،دهلى)

कि हमारे महदी की सच्चाई के दो निशान हैं जो धरती और आसमान की पैदाइश के दिन से आज तक किसी के लिए प्रकट नहीं हुए। अर्थात रमज़ान के महीने में चाँद को (चाँद ग्रहण की रातों में से) पहली रात को और सूरज को (सूरज ग्रहण की तिथियों में से) मध्य तिथि को ग्रहण लगेगा।

कुछ लोगों का यह विचार है कि इस निशान के अनुसार

चाँद की पहली तिथि और सूरज की मध्य तिथि को ग्रहण लगेगा, जो उचित नहीं। क्योंकि हदीस में ''क़मर'' को ग्रहण लगने का वर्णन है और शब्दकोष के अनुसार पहली रात के चाँद को क़मर नहीं बल्कि हिलाल कहते हैं। प्राकृतिक नियमों के अनुसार चाँद और सूरज के ग्रहण की तिथियाँ निर्धारित हैं। जैसा कि नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहिब ने लिखा है :-

''ज्योतिषियों के निकट चाँद ग्रहण धरती के सूरज के सामने आने से एक साधारण स्थिति में तेरहवीं चौदहवीं और पन्द्रहवीं रात के अतिरिक्त और इसी तरह सूर्य ग्रहण भी विशेष स्थिति में सत्ताईसवीं अट्ठाईसवीं और उन्तीसवीं तिथियों के अतिरिक्त कभी नहीं होता।'' (हुजजुल किरामा, पृष्ठ 344)

सूर्य-चन्द्र ग्रहण निशान का प्रकटन

''इमाम महदी अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर गवाह यह महान निशान सन् 1894 ई. (अर्थात 1311 हिजरी) में रमज़ान मास की निर्धारित तिथियाँ तेरह और अट्ठाईस को प्रकट हुआ।'' (अख़बार आज़ाद 4 मई सन् 1894 ई., सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट 6 अप्रैल सन् 1894 ई.)

जब यह असाधारण निशान प्रकट हुआ उस समय हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के अतिरिक्त कोई मसीह या महदी का दावेदार नहीं था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस के अनुसार यह संभव ही नहीं कि मुद्दई के बिना ही गवाह प्रकट हो जाएँ। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम ने इस निशान के प्रकट होने पर फ़रमाया :-

''महदी मौऊद की यह भी निशानी है कि ख़ुदा उसके लिए

उसके जीवन काल में यह निशान प्रकट करेगा कि चाँद को अपनी निर्धारित रातों की तिथियों में से पहली रात को ग्रहण लगेगा और सूरज को अपने निर्धारित दिनों में से बीच वाले दिन ग्रहण लगेगा, और ये दोनों चन्द्र-सूर्य ग्रहण रमज़ान के महीने में होंगे... निशान के रूप में यह चन्द्र-सूर्य ग्रहण केवल मेरे समय में मेरे लिए प्रकट हुआ है और मुझसे पहले किसी को यह संयोग प्राप्त नहीं हुआ कि एक ओर तो उसने महदी मौऊद होने का दावा किया हो और दूसरी ओर उसके दावे के बाद रमज़ान के महीने में निर्धारित तिथियों में चन्द्र-सूर्य ग्रहण भी लगा हो और उसने चन्द्र-सूर्य ग्रहण को अपने लिए एक निशान ठहराया हो।'' (चश्मा-ए-मारिफत, पृष्ठ 314 हाशिया)

अत: आपने फ़रमाया :-

आसमाँ मेरे लिए तूने बनाया इक गवाह।
चाँद और सूरज हुए मेरे लिए तारीक-व-तार।।
यारो जो मर्द आने को था वह तो आ चुका।
यह राज़ तुमको शम्स-व-क़मर भी बता चुका।।

यह निशान हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर एक बहुत बड़ा ख़ुदाई सत्यापन है। बारह तेरह शताब्दियों से इस निशान के बारे में इस्लाम के बुज़ुर्ग बयान करते आए हैं। अन्तत: हज़रत महदी अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की ओर से ज्ञान पाकर इस निशान के घटित होने से पूर्व ही घोषणा कर दी थी। अत: यह पूर्णत: मानवीय शक्तियों से बाहर और सर्वशक्तिमान ख़ुदा की ओर से सन् 1311 हिजरी अर्थात सन् 1894 ई. में प्रकट हुआ। इस निशान के महत्व को देखते हुए कुछ और पुस्तकों के नाम और उद्धरण प्रस्तुत हैं जिनमें इस निशान की और भी महत्ता और व्याख्या वर्णन की गई है।

1. अल्फतावा अल्हदीसिया - लेखक अल्लामा शेख

अहमद शहाबुद्दीन अहमद हजरुल हैसमी मुद्रित मिस्र पृष्ठ 31

2. हुजजुल किरामा फी आसारिल क़ियामा - लेखक नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहिब शासक भोपाल मुद्रित सन् 1291 हिजरी पृष्ठ 344

3. अक़ायदे इस्लाम - लेखक मौलाना अब्दुल हक़ साहिब मुहद्दिस देहलवी मुद्रित 1292 हिजरी पृष्ठ 182-183

4. आख़िरी गत - लेखक मौलवी मुहम्मद रमज़ान साहिब हनफी मुद्रित मुज्तबाई सन् 1278 हिजरी

5. अहवालुल आख़िरत - लेखक हाफ़िज़ मुहम्मद साहिब लखूके मुद्रित सन् 1205 हिजरी, पृष्ठ 23

6. इक्तिराबुस्साअत - लेखक अबुल खैर नवाब नूरुल हसन खाँ साहिब मुद्रित सन् 1301 हिजरी पृष्ठ 106, 107

7. क़ियामत नामा फारसी - (अलामाते कियामत उर्दू) लेखक शाह रफीउद्दीन साहिब देहलवी

8. इकमालुद्दीन - पृष्ठ 368

9. मक्तूबात-ए-इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फे सानी जिल्द 2, पृष्ठ 132

10. बिहारुल अनवार जिल्द 13, पृष्ठ 58

11. क़सीदा जहूर-ए-महदी - लेखक मौलवी फिरोज़ुद्दीन साहिब लाहौरी, पृष्ठ 41

12. हिकमते बालिग़: - लेखक मौलवी अबुल जमाल अहमद मुकर्रम साहिब अब्बासी सदस्य समिति इशाअतुल उलूम हैदराबाद दकन मुद्रित दारुल मआरिफ पृष्ठ 409

चाँद सूरज ग्रहण का निशान इमाम महदी की सच्चाई पर एक पक्का और विश्वसनीय निशान है। जो पूर्णत: मानवीय शक्तियों से बढ़कर केवल ख़ुदा तआला की शक्ति और युक्ति से प्रकट हुआ। चौदह शताब्दियों से रब्बानी उलमा और मुहद्दसीन

इसे बयान करते आए हैं। अन्ततः ख़ुदा तआला ने इस निशान को पूरा करके हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर मुहर लगा दिया। अतः हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :-

اِسْمَعُوْا صَوْتَ السَّمَآءِ جَآءَ الْمَسِيْح جَآءَ الْمَسِيْح
نیز بشنو از زمیں آمد امام کامگار[1]

मुजद्दिदों के बारे में हदीस

सूर्य-चन्द्र ग्रहण की तरह हर शताब्दी हिजरी के प्रारंभिक काल में मुजद्दिदों के आने के संबंध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक स्पष्ट कथन है। जिसके अनुसार लगातार तेरह शताब्दियों तक मुजद्दिद आते रहे और चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में आने वाले मुजद्दिद के बारे में उलमा रब्बानी (ब्रह्मज्ञानियों) को यह विश्वास था कि वही इमाम महदी अलैहिस्सलाम होंगे। हदीस में लिखा है :-

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ یَبْعَثُ لِهٰذِهِ الْاُمَّةِ عَلٰی رَأْسِ کُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنْ یُّجَدِّدُ لَهَا دِیْنَهَا۔

(ابوداؤد جلد 2 صفحہ 212 کتاب الملاحم باب ما یذکر فی قرن المائۃ مطبع نولکشور، مشکوٰۃ صفحہ 14)

अर्थात हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला इस उम्मत के लिए हर शताब्दी के प्रारम्भिक काल में

1. अनुवाद :- आकाश की आवाज़ सुनो कि, मसीह आ गया, मसीह आ गया और धरती से भी सफल इमाम के आने की शुभसूचना सुनो। - अनुवादक

मुजद्दिद (सुधारक) पैदा करता रहेगा।

समस्त इस्लामी विद्वान इस हदीस की प्रमाणिकता पर सहमत हैं और घटनाओं ने इसको प्रमाणित कर दिया है कि तेरह शताब्दियों में से कोई शताब्दी ऐसी नहीं गुज़री जिसके प्रारम्भिक काल में मुजद्दिद न आए हों। अत: मशहूर किताब हुजजुल किरामा पृष्ठ 135-139 से तेरह शताब्दियों के मुजद्दिदों की सूची उद्धृत है।

1. पहली शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत उमर इब्नि अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहि

2. दूसरी शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत इमाम शाफई, हज़रत इमाम अहमद इब्नि हम्बल रहमतुल्लाह अलैहि

3. तीसरी शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत अबू शरह व हज़रत अबुल हसन अश्अरी रहमतुल्लाह अलैहि

4. चौथी शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत अबू उबैदुल्लाह नीशापुरी व काज़ी अबू बकर बाकलदनी रहमतुल्लाह अलैहि

5. पाँचवी शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैहि

6. छठी शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत सैयद अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैहि

7. सातवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत इमाम इब्नि तीमिया व हज़रत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैहि

8. आठवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत हाफ़िज़ इब्नि हजर अस्कलानी व हज़रत सालेह इब्नि उमर रहमतुल्लाह अलैहि

9. नवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद - हज़रत अल्लामा

जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लााह अलैहि

10. दसवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद – हज़रत इमाम मुहम्मद ताहिर गुजराती रहमतुल्लाह अलैहि

11. ग्यारहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद – हज़रत शेख़ अहमद सरहिन्दी इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैहि

12. बारहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद – शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दस देहलवी रहतुल्लाह अलैहि

13. तेरहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद – हज़रत सैयद अहमद बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि

तेरह शताब्दियों के मुजद्दिदों की सूची लिखने के बाद लिखा है :-

و بر سرمائتہ چہار دہم کہ دہ سال آنرا باقی است ۔اگر ظہور مہدی
علیہ السلام و نزول عیسیٰ صورت گرفت پس ایشاں مجدّد و مجتہد باشند

अनुवाद :- कि चौदहवीं शताब्दी प्रारंभ होने में अभी दस वर्ष शेष हैं। अगर इसमें महदी व ईसा प्रकट हो जाएँ तो वही चौदहवीं शताब्दी के मुजद्दिद होंगे। (किताब हुजजुल किरामा सन् 1291 हिजरी)

इसी प्रकार पत्रिका अन्जुमन ताईदे इस्लाम अप्रैल सन् 1920 ई. के अंक में लिखा है :-

हदीसों में मरियम व इब्नि मरियम आया है कि वह शताब्दी के प्रारंभिक काल में आएगा और चौदहवीं शताब्दी का मुजद्दिद होगा।''

*– तेरह शताब्दियों के मुजद्दिदों की एक सूची अल्लामा अब्दुल हई साहिब मरहूम फिरंगी महली ने मज्मुआ अल्फतावा जिल्द 4, पृष्ठ 67 पर भी लिखी है। (देखें नूरुल ऐनैन अला तफ्सीरुल जलालैन – लेखक काज़ी मुजीबुर्रहमान अल अज़हरी)

चौदहवीं शताब्दी हिजरी का अन्त
और
वर्तमान युग के मुजद्दिद (अवतार) की घोषणा

चौदहवीं शताब्दी हिजरी का अन्त हो चुका है इस शताब्दी के मुजद्दिद (इमाम महदी अलैहिस्सलाम) को शताब्दी के प्रारम्भिक काल में प्रकट हो जाना चाहिए था। यह कदापि संभव नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कही हुई बात झूठी हो। अत: चौदहवीं शताब्दी के मुजद्दिद हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम नि:सन्देह प्रकट हो चुके हैं। परन्तु संभव है कि कुछ लोग अज्ञानता अपरिचय और उसकी खोज में प्रयास और चिन्तन मनन न करने या दुआएँ न करने के कारण उसे स्वीकार करने और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सलाम पहुँचाने से वंचित हों।

हम पूरे दृढ़ विश्वास से कहते हैं कि वह वर्तमान युग का कथित अवतार इमाम महदी ठीक अपने समय पर प्रकट हुआ। उसने बार-बार घोषणा की :-

1. ''जब तेरहवीं शताब्दी हिजरी का अन्त हुआ और चौदहवीं शताब्दी हिजरी का प्रारंभ होने लगा तो ख़ुदा तआला ने इल्हाम के द्वारा मुझे सूचना दी कि तू इस शताब्दी का मुजद्दिद (सुधारक) है।'' (किताबुल बरिय: पृष्ठ 168 हाशिया)

2. ''हाय यह क़ौम नहीं सोचती कि, अगर यह कारोबार ख़ुदा की ओर से नहीं था तो क्यों ठीक शताब्दी के सर पर इसकी बुनियाद डाली गई और फिर कोई बतला न सका कि तुम झूठे हो और अमुक सच्चा व्यक्ति है।'' (ज़मीमा अरबईन नं. 3, 4, पृष्ठ 2)

3. ''खेद है इन लोगों की हालतों पर, इन लोगों ने ख़ुदा और रसूल के कथन की कुछ भी परवाह न की और शताब्दी पर भी सत्तरह वर्ष बीत गए मगर इनका मुजद्दिद अब तक किसी गुफा में छुपा बैठा है।'' (अरबईन नं. 3. पृष्ठ 13)

*- यह घोषणा हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने शताब्दी के सत्तरह वर्ष बीतने पर की थी। परन्तु अब तो चौदहवीं शताब्दी हिजरी समाप्त भी हो चुकी है और पन्द्रहवीं शताब्दी हिजरी के भी कई दशक बीत चुके हैं।

इमाम महदी के प्रकट होने का समय एवं अन्य निशानियाँ

क़ुरआन करीम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा आख़िरी ज़माने और इमाम महदी अलैहिस्सलाम के संबंध में बयान की हुई सारी निशानियाँ पूरी हो चुकी हैं। उनका वर्णन करना आवश्यक है। क्योंकि उनमें से हर एक अपने आप में एक बड़ी गवाही का स्थान रखती है।

*- ऊँटनियाँ बेकार हो चुकी हैं।
*- नहरें खोदी गईं।
*- पहाड़ तोड़े गए।
*- जहाज़, रेल, मोटरें इत्यादि नई-नई सवारियों का आविष्कार हुआ।
*- प्लेग की महामारी फूटी।
*- भयानक भूकम्प आए।
*- भयानक सूखे पड़े।
*- भयानक युद्ध हुए।
*- व्यापक तौर पर झूठ बोला जाने लगा।

✻– पुच्छल तारा निकला।
✻– दुराचार चरमसीमा को पहुँच गया।
✻– भाप से चलने वाले जहाज़ों का आविष्कार हुआ।
✻– बहुत अधिक छापाखानों का आविष्कार हुआ।
✻– टिड्डी दल आए।
✻– अकस्मात मौतें होने लगीं।
✻– माता-पिता से दुर्व्यहार होने लगा।
✻– नैतिक और सामाजिक बिगाड़ अधिकतर होने लगा।
✻– मज़दूर संघ बन गया।
✻– पूरब और पश्चिम के संबंध स्थापित हुए।
✻– अरबों पर बड़े मुश्किल दौर आए।
✻– दज्जाल विस्तारपूर्वक प्रकट हुआ।
✻– याजूज माजूज रूस और अमेरिका के रूप में प्रकट हुए।
✻– पश्चिमी क़ौमें आध्यात्मिकता से वंचित हुईं।
✻– धरती ने अपने ख़ज़ाने उगले।
✻– अन्तरिक्ष में खोजबीन होने लगी।
✻– मुसलमानों के 72 फ़िर्क़े बन गए।
✻– रहस्यज्ञान प्रकट होने लगे।
✻– काबा शरीफ़ के हज से रोका गया।
✻– उलेमा खराब हो गए।
✻– मस्जिदें भव्य और सुन्दर बनने लगीं।
✻– इस्लाम का केवल नाम शेष रह गया।
✻– क़ुरआन के केवल शब्द शेष रह गए।
✻– क़ुरआन व्यवसाय के तौर पर प्रयोग किया जाने लगा।
✻– शराब की अधिकता हो गई।
✻– स्त्रियों ने पुरुषों का भेष धारण करना शुरू कर दिया।
✻– पुरुषों ने स्त्रियों का भेष धारण करना शुरू कर दिया।

*- ईसाइयत का बोलबाला हुआ यहाँ तक कि ईसाई काबा शरीफ पर अपना झण्डा लहराने के स्वप्न देखने लगे।

यह सारी निशानियाँ हदीसों में विस्तारपूर्वक पाई जाती हैं। जो हमारी आँखों के सामने पूरी हो गईं और पूरी हो रही हैं। इसलिए इस बारे में प्रमाण प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं। ये सारी भविष्यवाणियाँ बिहारुल अनवार जिल्द 13, पृष्ठ 152 और इक्तिराबुस्साअत पृष्ठ 38 से पृष्ठ 54 तक वर्णित है। उद्धरण पूर्णत: अबू नईम तिर्मिज़ी, तिबरानी, अहमद, इब्नि अबी दुनिया, इब्नि असाकर अद्दीलमी, अलबेहकी, अस्सलमा, इब्नि अबी हातिम और हदीसों की किताबों से लिए गए हैं। इसी तरह इमाम महदी के नाम क़ौम और अन्य व्यक्तिगत बातें इतनी मतभेदपूर्वक बयान हुई हैं कि अल्लामा इब्नि खुल्दून ने स्पष्ट तौर पर कहा कि थोड़ी बहुत मिलावट से कोई भी जाँच पड़ताल खाली नहीं।

(मुक़दमा इब्नि खुल्दून मुद्रित मिस्र पृष्ठ 191)

फिर भी ख़ुदा तआला की युक्ति के अनुसार सब बातें किसी न किसी रूप में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम पर साबित हो चुकी हैं। इसलिए नि:सन्देह आप ही वर्तमान युग में चौदहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद (अवतार) और इमाम महदी हैं। इसीलिए आप फ़रमाते हैं :-

''मसीह जो आने वाला था यही है चाहो तो स्वीकार करो। जिस किसी के कान सुनने के हों सुने। यह खुदा तआला का काम है और लोगों की नज़रों में आश्चर्य।''

(तोहफा गोलड़विया)

मसीह के प्रादुर्भाव का समय

प्रतीक्षा करने वाले लोग हार्दिक इच्छा रखते थे कि वर्तमान युग के मुजद्दिद (अवतार) इमाम महदी अलैहिस्सलाम प्रकट हों तो हम हाज़िर होकर महामान्य हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सलाम पहुँचाकर उसके समर्थन और सहायता में लग जाएँ। लेकिन जब समय आ गया तो स्वयं को विद्वान समझने वाले उलमा ही इमाम महदी के विरोधी हो गए।

या तो वह दिन जब कि
कहते थे यह सब अरकान दीं
महदी-ए-मौऊद अब जल्द होगा आशकार
कौन था जिसकी तमन्ना यह न थी इक जोश से
कौन था जिसको न था उस आने वाले से प्यार
फिर वे दिन जब आ गए
और चौदहवीं आई सदी
सब से अव्वल हो गए मुन्किर यही दीं के मिनार
फिर दोबारा आ गई अहबार में रस्मे यहूद
फिर मसीहे वक़्त के दुश्मन हुए ये जुब्ब:दार
क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया होकर मसीह
खुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे बहार

ख़ुदा के वास्ते ! बड़े ध्यान से सोचिए कि सत्यवादियों के सरदार (सिरमौर) एवं प्रतिष्ठित अवतार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार चौदहवीं शताब्दी हिजरी में आने वाला वर्तमान सुधारक मसीह-व-महदी क्यों नहीं आया? जबकि सारी शताब्दी बीत चुकी है और सारी निशानियाँ भी पूरी हो गयीं। आने वाला हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के रूप में नि:सन्देह तौर पर आ चुका

है। आज धरती पर कोई नहीं जो ज़िन्दा खुदा से ताजा इल्हाम पाकर उसका विरोध कर रहा हो। विरोधी केवल मानुषिक एवं संदिग्ध विचार से काम ले रहे हैं। हम रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनों से टकराने वाले इन मानुषिक और संदिग्ध विचारों को स्वीकार नहीं कर सकते। सत्यता यही है कि समय हो चुका है और निशानियाँ पूरी हो चुकी हैं और धरती और आसमान ने गवाही दे दी कि आने वाला वर्तमान सुधारक, इमाम महदी मसीह मौऊद और क़ाइम आल-ए-मुहम्मद प्रकट हो चुका है जिसने कहा :-

वक़्त था वक़्ते मसीहा, न किसी और का वक़्त।
मैं न आता तो कोई और ही आया होता।।

चतुर्थ खण्ड

इमाम महदी के प्रादुर्भाव की प्रतीक्षा

समस्त धर्मों के अनुसार अन्तिम युग[1] में एक कथित अवतार का जन्म होना था। क़ुरआन करीम, हदीसों और इस्लाम के बुज़ुर्गों एवं अन्य विद्वानों और मुहद्दसों के अतिरिक्त अन्य धर्मों के बड़े-बड़े धर्मावलम्बियों के वर्णनों, रोअया और कुशूफ़ स्वप्नों और इल्हामों से ज्ञात होता है कि इस्लामी परिभाषा के अनुसार समस्त धर्मों का वह अवतार, इमाम महदी के रूप में प्रकट होना था। उसके प्रादुर्भाव का युग तेरहवीं शताब्दी हिजरी अर्थात उन्नीसवीं शताब्दी ईसवी का अन्तकाल और चौदहवीं शताब्दी हिजरी अर्थात बीसवीं शताब्दी ईसवी का प्रारंभिक काल और दुनिया की आयु के छठे हज़ार का आख़िरी और सातवें हज़ार का प्रारंभिक काल निर्धारित था। उसकी समस्त निशानियों और उद्देश्य से ज्ञात होता है कि वह अरब से पूर्व की ओर हिन्दुस्तान में प्रकट होगा।

समस्त धर्मों के अनुयायियों को उसके प्रकटन की घोर प्रतीक्षा थी जो धीरे-धीरे बढ़ती गई। अत: वह ठीक समय पर अरब से पूर्व दिशा में हिन्दुस्तान के एक छोटे से गाँव क़ादियान से प्रकट हुआ।

उदाहरण के तौर पर कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं :-

1. अन्तिम युग से तात्पर्य कलियुग - अनुवादक

इमाम महदी के लिए, मुस्लिम विद्वानों की प्रबल प्रतीक्षा

1. अहले सुन्नत व अहले हदीस फिर्का के विद्वानों के कथन

(1) सन् 1309 हिजरी में मौलवी शकील अहमद साहिब सहसवानी ने कहा :-

दीन-ए-अहमद का ज़माने से मिटा जाता है नाम।
क़हर है ऐ मेरे अल्लाह ! यह होता क्या है।।
किस लिए महदी-ए-बरहक़ नहीं ज़ाहिर होते।
देर ईसा के उतरने में खुदाया क्या है।।
आलिमुल ग़ैब है, आईना है तुझ पर सब हाल।
क्या कहूँ मिल्लत-ए-इस्लाम का नक्शा क्या है।।
रात दिन फितनों की बौछार है बारिश की तरह।
गर न हो तेरी सियानत[1] तो ठिकाना क्या है।।

(अल हक़ अस्सरीह फी हयातिल मसीह पृष्ठ 133, मुद्रित 1309 हिजरी)

2. अबुल खैर नवाब नूरुल हसन खान साहिब ने सन् 1301 हिजरी में लिखा :-

''इमाम महदी का प्रादुर्भाव तेरहवीं हिजरी शताब्दी पर होना चाहिए था। मगर यह शताब्दी पूरी बीत गई महदी न आए। अब चौदहवीं शताब्दी हमारे सर पर आई है। इस शताब्दी से इस किताब के लिखने तक 6 माह बीत चुके हैं। संभव है कि अल्लाह तआला अपनी दया और कृपा करे और चार छः वर्ष के अन्दर महदी प्रकट हो जाएँ।''

(इक्तिराबुस्साअत, पृष्ठ 221)

3. अखबार अहले हदीस 26 जनवरी सन् 1912 ई. के

---

1. अर्थात हिफ़ाज़त (अनुवादक)

अंक में पृष्ठ 1 पर लिखा गया :-

''ख्वाजा साहिब (हसन निज़ामी) ने लिखा है कि इस्लामी देशों की यात्रा में जितने बुज़ुर्गों और विद्वानों से मुलाक़ात हुई, मैंने उनको इमाम महदी का बड़ी प्रबलता से प्रतीक्षक पाया। शेख सन्नोसी रहमतुल्लाह अलैहि के एक खलीफा से भेंट हुई। उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि इसी 1330 हिजरी में प्रशंसित इमाम (महदी) प्रकट हो जाएँगे।''

4. अल्लामा इक़्बाल ने कहा :-

यह दौर अपने इब्राहीम की तलाश में है
सनम कदा है जहाँ ला इलाहा इल्लल्लाह !

(ज़रबे कलीम)

5. नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहिब शासक भोपाल ने बहुत से उलमा की मदद और कठिन परिश्रम से मसीह व महदी और क़ियामत की निशानियों के संबंध में जाँच पड़ताल की है। वह पूरे विश्वास से प्रतीक्षा में थे कि मसीह व महदी जल्द आएँ और वह महामान्य हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उन्हें सलाम पहुँचाएँ। वह लिखते हैं :-

ایں بندہ حرص تمام دارد کہ اگر زمانہ حضرت روح اللہ سلام اللہ
علیہ را دریا بم اول کسے کہ ابلاغ سلام نبوی کند من باشم.

(حجج الکرامہ صفحہ 449 مطبوعہ 1291ہجری)

कि यह भक्त बड़ी इच्छा रखता है कि अगर हज़रत रूहुल्लाह (ईसा[1]) अलैहिस्सलाम का ज़माना पाऊँ तो पहला व्यक्ति जो उन्हें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सलाम पहुँचाए वह मैं हूँ।

6. लाखों मुरीदों के पीर लुधियाना के मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत सूफी अहमद जान साहिब जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बैअत के

1. अर्थात मसीह मौऊद व महदी मा`हूद - अनुवादक

घोषणा पत्र से पहले देहान्त पा गए। वह वर्तमान युग को मसीह व महदी का ज़माना मानते थे, बल्कि अपने ज्ञान एवं अध्यात्म की दृष्टि से समझते थे कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ही मसीह व महदी होंगे। इसलिए उन्होंने बार-बार बैअत करने का निवेदन भी किया और एक बार क़सीदा लिखकर कहा कि :-

हम मरीज़ों की है तुम्ही पे नज़र
तुम मसीहा बनो खुदा के लिए

(तारीख-ए-अहमदियत)

7. चौधरी मुहम्मद हुसैन साहिब एम.ए. लिखते हैं :-

हे रब्ब ! हमें इतनी उम्र दे कि हम रहतुल्ललिआलमीन (अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नायब का युग देखें। हे रब्ब ! हम पर दया कर और उसे अभी भेज, अगर यह समय उसके प्रकट होने का नहीं तो और कौन सा होगा।

بیا بیا کہ نسیمِ بہار می گزرد
بیا کہ گل زرخت شرمسار می گزرد
بیا کہ فصل بہار است موسم شادی
مدار منتظرم روزگار می گزرد

(کاشفِ مغالطہٗ قادیانی صفحہ 35)

8. श्री सैयद अबुल आला मौदूदी संस्थापक जमाअते इस्लामी ने लोगों की प्रबल प्रतीक्षा को देखते हुए कहा :-

''अधिकतर लोग धर्म-सुधार आन्दोलन के लिए किसी ऐसे सिद्ध पुरुष (महर्षि) को ढूँढते हैं जो उनमें से हर एक की पूर्ण विचारधारा का साक्षात रूप हो। दूसरे शब्दों में ये लोग वस्तुत: नबी के इच्छुक हैं। यद्यपि मुँह से खत्मे नुबुव्वत का इक़रार करते हैं और यदि कोई नुबुव्वत के जारी होने का नाम भी ले ले तो उसकी ज़ुबान गुद्दी से खींचने के लिए तैयार हो जाएँ मगर

अन्दर से उनके दिल एक नबी माँगते हैं और नबी से कम किसी पर राज़ी नहीं।''

(तर्जुमानुल क़ुरआन दिसम्बर सन् 1942 ई., पृष्ठ 4-6)

9. फख्रे हिन्द जनाब मिर्ज़ा रफी सौदा (देहान्त 1195 हिजरी) ने इच्छा व्यक्त करते हुए लिखा कि :-

सौदा को आरज़ू है कि जब तू करे ज़हूर
उसकी यह मुश्ते खाक हो तेरी सफ़े निआल

(कुल्लियात-ए-सौदा पृष्ठ 264 नवलकिशोर प्रेस लखनऊ सन् 1932 ई.)

10. हज़रत सैयद अहमद बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि के दरबारी शायर श्री हकीम मोमिन खाँ मोमिन (देहान्त 1268 हिजरी) ने कहा :-

ज़माना महदी-ए-मौऊद का पाया अगर मोमिन।
तो सबसे पहले तू कहियो सलामे पाक हज़रत का।।

11. मशहूर मुल्हम मौलवी हज़रत अब्दुल्लाह गज़नवी ने अपने देहान्त से कुछ दिन पूर्व अपने कश्फ़ (ईशप्रदत्त ज्ञान) से एक भविष्यवाणी की थी कि :-

''एक नूर आसमान से क़ादियान की तरफ उतरा। किन्तु खेद है कि मेरी सन्तान उससे वंचित हो गई।''

यह बयान उनके एक मित्र श्री हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ साहिब जिलेदार नहर ने कई जगह बयान की है।

(इज़ाला औहाम, पृष्ठ 497, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 3)

12. हज़रत ख्वाजा ग़ुलाम फरीद साहिब रहमतुल्लाह अलैहि चाचिड़ाँ वाले के सामने एक बार हाफिज़ गम्मू नामक एक व्यक्ति ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बारे में कुछ अशोभित शब्द कहना प्रारम्भ ही किया था कि वे उस पर अत्यन्त क्रोधित हुए और कहा :-

اوصافِ مہدی پوشیدہ و پنہاں ہستند۔آنچناں نیست کہ در دلہاء مردم نشستہ است۔چہ عجب کہ ہمیں مرزا صاحب قادیانی مہدیؔ باشد۔ (ارشاد ات فریدی جلد 3 صفحہ 123)

अर्थात महदी की विशेषताएँ अदृश्य और रहस्यरूपी हैं वे नहीं जो लोगों के दिल में बैठी हुई हैं। यह कौन सी आश्चर्य की बात है कि मिर्ज़ा साहिब क़ादियानी ही महदी हों।

13. हन्फ़ियों के मशहूर और प्रकाण्ड विद्वान मौलवी मुहम्मद रमज़ान शाह साहिब ने 'आख़िरी गत' मुद्रित मुज्तबाई सन् 1278 हिजरी में लिखा है :-

कहे हैं कि इस साल रमज़ान में
सूरज चाँद की ग्रहण दोनों सुनें
पहल तेरहवीं चाँद का ग्रहण हो
सत्ताइसवीं ग्रहण सूरज का हो

अर्थात इमाम महदी के प्रादुर्भाव के निशान, चाँद-सूरज ग्रहण के आधार पर, इमाम महदी अलैहिस्सलाम की प्रतीक्षा है।

14. पेश्तर इस माजरे के ऐ हुमाम
होगा जो इस साल में माहे सियाम
उसमें माहे मह्र का ऐ बा-वक़ूफ़
होगा वाकेअ यक खुसूफ व यक कुसूफ
और यों आवाज़ आवेगी वहाँ
वक़्त-ए-बैअत आसमाँ से नागहाँ
यानी यह महदी खलीफा, हक़ का है
पस सुनो तुम बात उसकी जो कहे

(आसारे महशर पृष्ठ 9, मुद्रित सन् 1869 ई.)

15. लेखक इक्तिराबुस्साअत ने इमाम महदी के प्रादुर्भाव की निशानियों के बारे में कहा है कि :-

كُلُّهَا مَوْجُوْدَةٌ وَهِيَ فِي التَّزَايُدِ يَوْمًا فَيَوْمًا وَ قَدْ كَادَتْ اَنْ تَبْلُغَ

الْغَايَةَ اَوْ قَدْ بَلَغَتْ

यह बात सन् 1076 हिजरी में कही थी अब 1301 हिजरी में बची खुची निशानियाँ भी प्रकट हो गईं। (इक्तिराबुस्साअत पृष्ठ 54)

16. अखबार-ए-वतन का एक शैर मशहूर है :-

یا صاحب الزمان بظہورت شتاب کن
عالم زدست رفت تو پادر رکاب کن[1]

17. इमाम महदी के प्रादुर्भाव के समय की महत्वपूर्ण निशानियों में से दज्जाल और याजूज व माजूज का भी प्रकटन था। जिनके प्रकट होने पर इमाम महदी की प्रतीक्षा अत्यन्त प्रबल हो गई। मौलाना जफर अली खान साहिब एडीटर अखबार ज़मींदार ने कहा :-

इलाही ! हस्ती-ए-मुस्लिम का अब तू हुमा निगहबाँ है
फिरंगी लश्करे दज्जाल हैं याजूज हैं रूसी !

(अखबार ज़मींदार 16 नवम्बर 1933 ई., ''दर्द मायूसी'' शीर्षकान्तर्गत)

18. ख्वाजा हसन निजामी बयान करते हैं :-

''वर्तमान युग के अवतार अर्थात इमाम महदी का प्रादुर्भाव उनकी (अर्थात मिस्र वासियों की) आस्था के अनुसार बहुत शीघ्र होने वाला है। वे कहते हैं कि हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम दुनिया के समस्त अन्धकारों को दूर करने वाले हैं।''

(शेख सन्नोसी और ज़हूर आख़िरुज़्ज़मान, पृष्ठ 7)

19. ख्वाजा हसन निजामी साहिब ने अरब और मिस्र वालों की इमाम महदी की प्रबल प्रतीक्षा की दशा का वर्णन करने के अतिरिक्त स्वयं भी लिखा :-

1. अनुवाद :- हे समय के इमाम (युगावतार)! अति शीघ्र प्रकट हो क्योंकि संसार भटक चुका है। - अनुवादक।

''निकट ही वह समय आने वाला है कि हज़रत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम (आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की असल शान ज़ाहिर करने के लिए प्रकट हों।''

(शेख सन्नोसी और ज़हूर महदी आख़िरुज़्ज़मान, पृष्ठ 7)

20. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने लिखा कि :-

مقام عزیمت و دعوت اور احیاء تجدید امت کی نسبت جو کچھ
بلاقصد زبان قلم پر آگیا تو اگرچہ اس کی تفصیل کا یہ موقعہ نہ
تھا لیکن زیادہ تر یہ خیال باعث ہوا کہ شاید ان حالات و وقائع
کا مطالعہ اصحاب اصلاح و استعداد کے لئے کچھ سود مند علم و
عمل ہو کسی کے قلب بصیرت و دائرہ اعتبار کو ان مجددین ملت
اور مصلحین حق کے اتباع و تشبّہ کی توفیق ملے۔شاید کوئی مردِ کا
رآمد صاحب عزم وقت کی پکار پر لبیک کہے اور زمانہ کی طلب و
جستجو کا سراغ بنے۔آج اگر کام ہے تو یہی کام ہے اور ڈھونڈ ہے
تو صرف اس کی. (تذکرہ صفحہ 264 طبع دوم۔از کتابی دنیا۔لاہور)

अनुवाद :- दृढ़ संकल्प, प्रचार और इस्लाम के सुधार एवं उद्धार के स्थान के बारे में अकस्मात् जो कुछ मुँह में आ गया तो, यद्यपि यह उसकी व्याख्या का अवसर न था लेकिन इसका यह विचार कारण बना, कि संभव है कि इन परिस्थितियों और घटनाओं का अध्ययन सुधार चाहने और सामर्थ्य रखने वाले मित्रों के लिए ज्ञान और कर्म की दृष्टि से कुछ लाभदायक हो और किसी की प्रतिभा और विश्वास को इस्लाम के उन सुधारकों और अवतारों की अनुसरण और सदृश बनने की सामर्थ्य मिले। संभव है कि कोई दृढ़निश्चयी और उपयुक्त शूरवीर समय की पुकार पर हाँ कहे और युग की माँग और चाहत का निशान बने। आज यदि काम है तो यही काम है और तलाश है तो केवल इसकी। (अनुवादक)

21. अखबार ज़मींदार में एक लम्बी कविता ''एक मुस्लेह की आमद'' के शीर्षक से प्रकाशित हुई थी। जिसके अन्तिम शैर निम्नलिखित हैं :-

आने वाले आ ज़माने की इमामत के लिए
मुज़्तरिब हैं तेरे शैदाई ज़ियारत के लिए
उठ दिखा गुम गश्त: राहों को सिरात-ए-मुस्तक़ीम
इक ज़माने को है मीरे कारवाँ का इन्तिज़ार

(ज़मींदार 9 मार्च सन् 1925 ई.)

22. श्री सैयद अबुल आला मौदूदी लिखते हैं :-

''बुद्धि चाहती है और प्रकृति मांग करती है और दुनिया के हालात की रफ्तार तकाज़ा करती है कि ऐसा 'लीडर' पैदा हो। चाहे इस दौर में पैदा हो या ज़माने की हज़ार गर्दिशों के बाद पैदा हो। उसका नाम इमाम महदी है जिसके बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में भविष्यवाणियाँ मौजूद हैं।'' (तजदीद व अह्या-ए-दीन, पृष्ठ 530)

23. अबुल कलाम आज़ाद अपने ज़माने में इमाम महदी के लिए प्रबल प्रतीक्षा का वर्णन करते हुए लिखते हैं :-

''यदि उनमें से किसी बुज़ुर्ग का कुछ पलों के लिए भी क़ौम की दैयनीय स्थिति पर ध्यान जाता तो यह कह कर स्वयं अपने और अपने श्रद्धालुओं के दिलों को सांत्वना दे देते थे कि अब हमारी और तुम्हारी कोशिशों से क्या हो सकता है ? अब तो कियामत निकट है और मुसलमानों की तबाही अवश्य। सारे कामों को इमाम महदी के प्रादुर्भाव की प्रतीक्षा में स्थगित कर देना चाहिए। उस समय सारी दुनिया स्वयं मुसलमानों के लिए खाली हो जाएगी।'' (तज़्किर: द्वितीय संस्करण पृष्ठ 10)

24. मौलाना सैयद अबुल हसन साहिब नदवी ने अपनी किताब 'क़ादियानियत' के प्रारम्भिक भाग में लिखा है कि :-

''जब मिर्ज़ा साहिब ने दावा किया उस समय इस्लामी जगत मसीह-व-महदी की प्रतीक्षा में था।''

25. प्रमुख शायर जनाब सूफी सिद्दीक़ी मेरठी, इमाम महदी अलैहिस्सलाम की पूर्णत: प्रतीक्षा करते हुए प्रार्थना करते हैं :-

या हबीबुल्लाह ! सुन लीजिए ख़ुदा के वास्ते
आए हैं हम दास्तान-ए-ग़म सुनाने के लिए
हज़रते ईसा न आए अब, तो फिर क्या आएँगे
मज़हब-ए-इस्लाम का सिक्का जमाने के लिए
ज़ुल्मो-इस्तिब्दाद की या शाह ! बस हद हो चुकी
अब तो रहबर की ज़रूरत है ज़माने के लिए

(अखबार मदीना 9 मई सन् 1922 ई.)

इमाम महदी के लिए, शिया विद्वानों की प्रबल प्रतीक्षा और उनके विचार

1. नवम्बर 1912 ई. के शिया पत्रिका 'बुरहान' के पृष्ठ 37 पर मौलवी नबी बख्श नामक ने इमाम महदी को संबोधित करते हुए कहा :-

शबोरोज़ है खल्क़ को इन्तिज़ार
दिखा दीजिए जलवा अयाँ अस्सलाम
नहीं ताब है अब हमें सब्र की
यह ग़ैबत है बारे गिराँ अस्सलाम
हमारी दुआ है यह सुबहो मसा
तुम्हारा हो ज़ाहिर निशाँ अस्सलाम

2. मौलवी सैयद मुहम्मद सिब्तैन साहिब ने सन् 1336 हिजरी में कहा कि :-

بیا اے امام صداقت شعار
کہ بگزشت از حد غم انتظار
زروئے ہمایوں بیفگن حجاب
عیاں ساز رخسار چوں آفتاب
بروں آئید از منزل اختفا
نمایاں کن آثار مہر و وفا

(غایت المقصود جلد 2، صفحہ 84 والصراط السوّی فی الحوال المہدی صفحہ 363)

अनुवाद :- हे सच्चे इमाम (सन्मार्ग दर्शक)! प्रकट हो क्योंकि प्रतीक्षा की सीमा गुज़र गई।

खूबसूरत चेहरे से पर्दा उठा और सूर्य की भाँति अपना चेहरा प्रकट कर।

परोक्ष से प्रत्यक्ष में आ, और प्रेम एवं निष्ठा के आसार (चिन्ह) दिखा। (अनुवादक)

3. श्री सैयद मुहम्मद अब्बास क़मर ज़ैदी अलवास्ती लिखते हैं :-

''संसार की प्रकृति चाहती है और बुद्धि गवाही देती है और मनुष्य की आवश्यकता बताती है कि ज़मामे में... ख़ुदा के विद्यमान होने का प्रमाण ज़रूरी है, चाहे वह नबी (अवतार) की दशा में हो या इमाम की... दुनिया इमाम के अस्तित्व से कदापि खाली नहीं रह सकती। इसलिए इमाम के अस्तित्व से इन्कार करना वस्तुत: नुबुव्वत, कानूने क़ुदरत क़ुरआन शरीफ़ एवं ख़ुदा के निशानों से इन्कार कर देने के समान है, जो बिना किसी धार्मिक एवं सामाजिक भेदभाव के किसी बुद्धिमान के लिए शोभा नहीं दे सकता। यही कारण है कि इस युग के जर्मन बुद्धिमान भी कहते हैं कि अब संसार के सुधार के लिए सुपर मैन ज़रूरी है।''

(आसारे-क़ियामत व ज़हूरे हुज्जत मुद्रित 1952 ई., पृष्ठ 17-18)

4. अल् शेख अली असग़ार अब्रोजरवी की किताब में पवित्र आयत :-

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ

की व्याख्या में लिखा है :-

ایں آیت شریفہ دلالت بر ظہور مہدی عجّل اللہ فرجہ بالاشارہ میکند.......و تابحال کہ ہزارو دو بست و ہفتا د و پنجسال کہ از ہجرت آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم میگزرد دین او غالب بر ہمہ دینہانشدہ است۔

कि ख़ुदा महदी को शीघ्र भेजे। यह आयत उसके प्रादुर्भाव पर संकेत करती है क्योंकि अभी तक हिजरी सन् के 1275 वर्ष बीत चुके हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का धर्म सब धर्मों पर प्रभुत्व नहीं पाया। फिर दूसरे धर्मों का वर्णन करके लिखते हैं :-

پس باید خداو ند بزرگی از اہل اسلام و آل محمد بر انگیزند تا آنکہ دینہارا بیک دین محمدیہ بر گر داند وسائر ادیان را از میاں برادر.....
والّا یا باید کذب لازم بیایدبر خدا وقول بایں کفر است۔

अर्थात चाहिए कि ख़ुदा मोमिनों और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों में से किसी शुद्धात्मा को खड़ा कर दे ताकि सब धर्मों को एकत्र करके मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म पर ले आए और शेष समस्त धर्मों को मध्य से उठा दे अन्यथा खुदा पर झूठ चरितार्थ होता है और ऐसा कहना कुफ्र है। (नूरुल अनवार, पृष्ठ 179-180)

5. शिया लोग दुआ करते हैं कि :-

عَجِّلْ فَرَجَهٗ وَ أَمْكِنْهُ مِنْ اَعْدَآئِكَ وَ اَعْدَآءِ رُسُلِكَ يَاأَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

(غایت المقصود جلد 2 صفحہ 192 از علّامہ علی حائری)

हे ख़ुदा ! महदी को शीघ्र पैदा कर और उसे अपने और

अपने रसूलों (अवतारों) के दुश्मनों पर प्रभुत्व दे।

6. श्री आमिर पुत्र आमिर बसरी कहते हैं :-

اِمَامَ الْهُدٰی مَتٰی اَنْتَ غَائِبٌ
فَمَنِّ عَلَیْنَا یَا اَبَانَابِاَوْبَةٍ

(الصراط السوی حصه اول صفحه 367)

कि हे सन्मार्ग दिखाने वाले इमाम (इमाम महदी) तू कब तक अदृश्य रहेगा हम पर अपने प्रादुर्भाव से उपकार कर।

7. एक प्रतिष्ठित इमाम शाफई हम्वैनी श्री रज़ा से रिवायत करते हैं कि आपने बड़े अफ़सोस से कहा कि :-

سَیِّدِیْ غَیْبَتُكَ لَفَتْ رِقَادِیْ

(الصراط السوی حصه اول صفحه534)

हे मेरे इमाम तेरी अनुपस्थिति ने मेरी नींद खो दी है और दिल का चैन छीन लिया है।

8. मीर सैयद अब्दुल हई साहिब इलाहाबाद सन् 1301 हिजरी में मुद्रित किताब 'हदीसुल ग़ासिय:' पृष्ठ 349 में लिखते हैं :-

''भूकम्प, भय और भयानक उपद्रव इमाम महदी के प्रादुर्भाव की निशानियाँ हैं।''

फिर लिखा :-

''इसी तरह इस वर्ष तेरहवीं शताब्दी हिजरी के अन्त और चौदहवीं शताब्दी हिजरी के प्रारम्भिक काल में बहुत भूकम्प आए और विभिन्न देशों में धरती और आसमान से निशान प्रकट हुए और हर प्रकार की मुसीबतें आयीं। ये सारी मुसीबतें, निशान और भूकम्प क़ियामत के निकट होने की निशानियाँ हैं।''

(हदीसुल ग़ासिय:, पृष्ठ 318)

9. अल्लामा अली अस्ग़र अब्रोजरवी ने इमाम महदी के प्रादुर्भाव की निशानियों के संबंध में लिखा है कि :-

"सारी पूर्ण रूप से पूरी हो चुकीं।"

(नूरुल अनवार, पृष्ठ 39)

10. सन् 1920 ई. में "मुज़्दा-ज़िक्रे अहवाल ज़हूर हज़रत साहिबुल अम्र" के शीर्षक से एक इश्तिहार प्रकाशित हुआ। जो सन् 1921 ई. में 'तशहीज़ुल अज़्हान' नामक मासिक पत्रिका के जुलाई अंक में पृष्ठ 17 पर प्रतिलिपित किया गया। उसमें लिखा है :-

"इस वर्ष 10 मुहर्रम सन् 1339 हिजरी को जुमा (शुक्रवार) था... आश्चर्य नहीं कि इसी रजब मास में या उसके बाद आसमान से वे आवाज़ें आएँ जिनका उद्देश्य यह होगा कि अल्लाह का खलीफा महदी इब्नि हसन है तुम किस चीज़ में झगड़ते हो।"

(इमाम महदी का ज़हूर- लेखक मुहम्मद असदुल्लाह साहिब काश्मीरी, पृष्ठ 404)

11. अस्सिरातस्सवी फी अहवालिल महदी मुद्रित 1336 हिजरी में शेख अत्तार की ओर इंगित दो शैर प्रकाशित हुए :-

सद हज़ाराँ औलिया रूए ज़मीं
अज़ ख़ुदा ख्वाहिन्द महदी रा यकीं
या इलाही ! महदीम अज़ ग़ैब आर
ता जहाने अद्ल गर दद आशकार

(पृष्ठ 368)

अर्थात धरती के लाखों औलिया (ऋषि, मुनि) ख़ुदा की ओर से इमाम महदी के आने की चाहत रखते हैं। हे अल्लाह! मेरे महदी को अपनी तरफ से जल्द पैदा कर ताकि संसार में न्याय स्थापित हो।

12. हज़रत इब्नि अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है :-

आपने फ़रमाया कि हज़रत ईसा इब्नि मरियम अलैहिस्सलाम ने पहली बार जब उस स्थान पर नज़र डाली जो क़ायम आले मुहम्मद (इमाम महदी) को प्रदान होने वाला था, तो निवेदन किया कि हे ख़ुदा ! मुझे क़ायम आले मुहम्मद (अर्थात इमाम महदी) बना दे। उत्तर मिला क़ायम (महदी) का वजूद अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा मुक़द्दर है। (अनुवाद - किताबुल महदी, पृष्ठ 112 मुद्रित तेहरान सन् 1966 ई. संकलन कर्ता सैयद सदरुद्दीन सद्र)

13. शिया पत्रिका 'मआरिफे इस्लाम' लाहौर मास नवम्बर सन् 1968 ई. के 'साहिबुज़्ज़मान नम्बर' के मुख पृष्ठ पर 'खिताब-ब-हज़रत साहिबुज़्ज़मान' के शीर्षकान्तर्गत हकीम-ए-मश्रिक इक़बाल के फारसी शैर लिखे हैं :-

اے سوار اشہب دوراں بیا
اے فروغ دیدۂ امکاں بیا
شورشِ اقوام را خاموش کن
نغمۂ خود را بہشت گوش کن
باز در عالم بیار ایّام صلح
جنگجو ہاں رابدہ پیغام صلح

अनुवाद :- हे युग के इमाम और आशाओं की किरण! प्रकट हो।

लोगों की व्याकुलता को समाप्त कर और अपने सुरीले गीत को हर दिशा में फैला।

और पुन: सारी दुनिया में मैत्री और सुख-शान्ति के दिन फेर और लड़ाई पर तत्पर लोगों को सुलह और मैत्री का सन्देश दे।

14. श्रीमती डाक्टर सैयदा अशरफ बुखारी साहिबा एम.ए.

पी.एच.डी. ने ‘हक़ीक़ते मुन्तज़र’ नामक शीर्षक पर बड़ी मेहनत से तहकीकी निबन्ध लिखा है। दर्जनों किताबों के प्रमाण प्रस्तुत करके आप लिखती हैं :-

‘‘ज़माना प्रतीक्षा कर रहा है कि कब ख़ुदा की ओर से प्रकट हों... ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा है जो पहले धर्मों के महान साहसी पैग़म्बरों (अवतारों) का उत्तराधिकारी हो... पथप्रदर्शन का सूर्य, संसार का सुधारक एवं प्रेमरूपी मदिरा हो, यह एक ऐसी सत्य की प्रतीक्षा है कि जिसके लिए इकबाल भी इच्छुक थे।

(मआरफ-ए-इस्लाम - साहिबुज़्ज़मान नम्बर पृष्ठ 44)

15. हज़रत इमाम महदी आख़िरुज़्ज़मान ‘अज़्ज़लल्लाहु तआला फ़रजहू’ के समक्ष सैयद पाक निहाद मेरे आक़ा (स्वामी) महान अलिफ शाह की आस्था व प्रतीक्षा :-

اے مبشر در کتاب آسمانی السلام
اے زنور اوّلین والے امام آخریں
اے کہ بینی ملّت اسلام در بےچارگی
بے ہمہ چیزے جہاں جز طاعت مغرب زمیں
مژدہ وصل تو بعد از انتظار قرنہا
حکم ابر رحمتے دارد بر تشنہ زمیں
چہرہ بکشاتا بر یزد چشم من لعل و گہر
در نثار مقدمت اے سرورِ دنیا و دیں

(معارف اسلام ۔صاحب الزمان نمبر صفحہ 92)

अनुवाद :- हे आसमानी ग्रन्थ में शुभसूचना पाने वाले! तुझ पर सलामती हो। तू पूर्व युगीन का प्रकाश और अन्तयुगीन का सन्मार्ग दर्शक है।

देख कि मुसलमान असहाय और लाचार हैं और यूरोप के अनुसरण से मानवता से रहित।

शताब्दियों प्रतीक्षा करने के बाद तेरे मिलन की शुभसूचना

प्यासी धरती के लिए वरदान के समान है।

हे दीन-दुनिया के नायक (सरदार)! अपना चेहरा दिखा ताकि मेरी आँखें मोती बरसाएँ और आपके आगमन पर मैं बलिहारी जाऊँ। (अनुवादक)

16. हज़रत शम्स तबरेज़ के बयान महदी-ए-आख़िरुज़्ज़मान पर आधारित फारसी काव्य, उद्धृत कुल्लियाते शम्स तबरेज़ पृष्ठ 906 संस्करण 1335 हिजरी अप्रैल 1917 ई. प्रेस नवलकिशोर, में लिखा है :-

بہ عصا شگاف دریاکہ تو موسٰی کلیمی
بہ در آں قبائے مہ راکہ تو نور مصطفائی
زِ غلافِ تن بروں آکہ توتیغ آبداری
زکمین گاہ بروں آکہ تو نقد بس ردائی
بشکن سبوئے خوباں کہ تو یوسف زمانی
چو مسیح دم رواں کن کہ تو ہم ازاں ہوائی

(معارف اسلام۔صاحب الزمان نمبر صفحہ30)

अनुवाद :- अपनी चमत्कार की लाठी से अन्धकार के सागर को फाड़ दे कि अल्लाह से बातें करने वाला तू ही मूसा है, और चाँद के रूप में निःसन्देह तू मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नूर है।

शरीर रूपी काया से बाहर आ कि तू चमचमाती तलवार के समान है और गुप्त स्थान से बाहर निकल कि तू एक चादर में लिपटा हुआ यथेष्ट और पर्याप्त खज़ाना है।

तू समस्त सुन्दर स्त्रियों की सुन्दरता के घमण्ड को तोड़ दे कि तू ही इस युग का यूसुफ है और मसीह नासिरी की तरह फूँक मार, कि तू ही उसका समरूप है। (अनुवादक)

17. 'साहिबुल अस्र' के शीर्षक से क़ाज़ी वसीयत अली का काव्य :-

साहिबुल अस्र अयाँ हो तो मज़ा आ जाए
बुतकदों में भी अज़ाँ हो तो मज़ा आ जाए
वस्फ़ है अश्रक़तिल अर्ज़ में उसका आया
उससे पूरनूर जहाँ हो तो मज़ा आ जाए
जलवा अफरोज़ हो कुर्सी पे इमामे आलम
रूइयते हक़ का गुमा हो तो मज़ा आ जाए

(मआरिफ़े इस्लाम - साहिबुज़्ज़मान नम्बर पृष्ठ 31)

18. 'बतकरीब ज़हूर हज़रत साहिबुल अस्र वज़्ज़मान अलैहिस्सलाम' के शीर्षक से असर तुराबी की चौपाइयों में से कुछ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हैं :-

(1)

तूर पर मूसा न लाए जिसकी ताब
वह तजल्ली आज होगी बे हिजाब
आ गए ईसा भी शौक़े दीद में
हज़रते हुज्जत ! उलट दीजै नक़ाब

(2)

हुज़ूर! दीद की हसरत भी इक क़यामत है
यह वारदाते मुहब्बत भी इक क़यामत है
ज़हूर हश्र बदामा है आप का, यह बजा
जनाब ! आपकी ग़ैबत भी एक क़यामत है

(मआरिफ-ए-इस्लाम, साहिबुज़्ज़मान नम्बर पृष्ठ 32)

19. मुहतरमा डाक्टर सैयद अशरफ बुखारी साहिबा एम.ए., पी.एच.डी. का निबन्ध 'हक़ीक़ते मुन्तज़र' पूरा आठ पृष्ठों पर आधारित है जो प्रत्येक दृष्टि से इमाम महदी के लिए साक्षात प्रतीक्षा है।

(देखें मआरिफे इस्लाम - साहिबुज़्ज़मान नम्बर पृष्ठ 37-44)

20. श्री असर फिदा बुखारी साहिब का काव्य 'आइये' के

शीर्षकान्तर्गत दृष्टिगोचर कीजिए :-

ऐ जानशीने अहमदे मुख्तार आइए
ऐ विरसादारे हैदरे कर्रार आइए
दीने खुदा के काफिला सालार आइए
दीने नबी के मोनिस व ग़म ख्वार आइए
चौथे फ़लक पे हज़रते ईसा हैं मुन्तज़िर
लेकर जल्व में अर्श के अनवार आइए
फिर यूरिशें हैं हम पे यहूद व हिनूद की
फिर दर पै सितम हैं ये कुफ्फार आइए
घेरा हुआ है क़ौम को फ़िस्क़ो फ़ुजूर ने
मिटने को अब हैं दीन के आसार आइए
अब हद से बढ़ गई हैं मुज़ालिम की सख्तियाँ
जितना भी जल्द हो सके सरकार आइए
अब इन्तज़ार करते हुए थक गए हैं हम
ढलने लगा है साया-ए-दीवार आइए
अब आ भी जाइएगा मेरे मुन्तज़र इमाम
मुद्दत से मुन्तज़िर हैं अज़ादार आइए
अरमान-ए-दीद शौक़-ए-ज़ियारत लिए हुए
बैठे हुए हैं तालिबे दीदार आइए

(मआरिफ-ए-इस्लाम, साहिबुज़्ज़मान नम्बर पृष्ठ 36)

21. 'खिताब बि पर्वरदिगार' के शीर्षक से सैयद अख्तर अलीशाह बाक़री की चौपाई :-

अब ज़माने ने यह अन्धेर मचा रखा है
कुफ्र-व-इल्हाद को ईमान बना रखा है
देख ! अपनी तुझे तौहीद बचानी है अगर
भेज उसको जिसे पर्दे में छुपा रखा है

(मआरिफ-ए-इस्लाम, साहिबुज़्ज़मान नम्बर, पृष्ठ 68)

अन्य धर्मों के लोगों के बयान और प्रबल प्रतीक्षा

इमाम महदी अलैहिस्सलाम वस्तुतः संसार के सभी धर्मों के अवतार हैं। इसीलिए मुसलमानों की तरह दूसरे लोगों को भी अपने-अपने पवित्र अवतार के नाम पर उसकी प्रबल प्रतीक्षा रही।

1. हिन्दुओं के मशहूर अखबार तेज़ देहली ने 18 अगस्त सन् 1930 ई. के प्रकाशन में 'भगवान कृष्ण आओ' और ''हिन्दुस्तान को श्रीकृष्ण की बड़ी ज़रूरत है'' के शीर्षक से लिखा :-

''भगवान कृष्ण के जन्म की महाभारत के युग से भी अत्यधिक आवश्यकता है... पिछले एक हज़ार वर्ष से जो हिन्दुस्तान में विपदाएँ आयी हैं उनका उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं पाया जाता। लेकिन बीसवीं शताब्दी में सामाजिक पतन और राजनैतिक गिरावट अपनी चरमसीमा को पहुँच गई हैं। यदि भगवत गीता में भगवान का वादा सच्चा है तो अवतार की सबसे ज़्यादा ज़रूरत आजकल है। इसलिए भगवान कृष्ण आओ, जन्म लो, संसार से अपवित्रता दूर करो, धर्म फैलाओ।''

(अल् अमान देहली 23 अगस्त सन् 1930 ई. से उद्धृत)

2. 17 अप्रैल 1930 ई. के ''हिन्दू अखबार'' में एक कविता प्रकाशित हुई :-

अब वक्ते मसीहाई है गोकुल के ग्वाले
बीमार तेरे नजअ में लेते हैं संभाले
वादे पे तेरे ज़िन्दा हैं अब तक तेरे शैदाई
क्या देर है आगोश-ए-मुहब्बत में बिठा ले

3. मशहूर ईसाई मिस्टर जे.एच. म्योर लिखते हैं :-

''हमें सच्चे मुक्तिदाता की आवश्यकता है। हाँ ऐसे मुक्तिदाता की जो हमें इन बेड़ियों से आज़ाद करे कि जिसमें हम बचपन से ही जकड़े जाते हैं।'' (किताब इल्मुल अखलाक और तालीम, पृष्ठ 9)

4. ईसाई साहिबान तो प्रतीक्षा करते-करते थक गए हैं यहाँ तक कि अब वे मसीह के पुनरागमन के अर्थ करने लग गए हैं कि उससे तात्पर्य गिरजाघर को नए सिरे से आबाद करना है इत्यादि। प्रतीक्षा करते करते ईसाई अन्वेषकों ने बहुत अनुमान लगाए और अनगिनत पुस्तकें लिखी हैं। कुछ उद्धरण उस लेख के निम्नलिखित हैं :-

1. एक किताब ईसाई स्कालर्स के बोर्ड ने पूरी तरह सोच समझ के बाद लिखी है और अपने अनुमान बयान करते हुए प्रबल प्रतीक्षा व्यक्त की। ('मल्लीनलदान' मुद्रित सन् 1884 ई., लन्दन)

2. The Appointed time मुद्रित लन्दन सन् 1896 ई.

3. हिज ग्लोरिस एपीरिंग, मुद्रित लन्दन

4. क्राइस्ट्स सेकन्ड कमिंग, मुद्रित लन्दन, पृष्ठ 15

5. दि कमिंग आफ दि लार्ड, मुद्रित लन्दन, पृष्ठ 1

6. अखबार 'फ्री थिंकर' लन्दन 7 अक्तूबर सन् 1900 ई. (इनके उद्धरण तोहफा गोलड़विया में भी दिए गए हैं)

5. एक ईसाई स्कालर ने लिखा :-

''हमें अध्यापक भी चाहिए और पैग़म्बर भी... संभवतः हमें एक मसीह की ज़रूरत है।''

6. एक हिन्दू कवि श्री तसव्वुर ड्रामाटिस्ट लुधियानवी की पुकार :-

ख्वाहिश है तेरी दीद की हर जाँ निसार को
रोज़ है तलाश तेरी दिले बेक़रार को
बस इन्तिज़ार अब न ऐ मोहन दिखाइए
तेरा ही वास्ता तुझे देता हूँ आइए
हैं ग़म रसीदा सीने से अपने लगाइए
बिगड़ी हुई हमारी है हालत बनाइए

मुद्दत हुई है दीदः व दिल वा किए हुए
और इक फक़्त तुम्हारी तमन्ना लिए हुए
(प्रताप का कृष्ण नम्बर, 20 अगस्त सन् 1927 ई. पृ. 4)

7. अन्तिम युग के कथित अवतार (इमाम महदी) के बारे में सब कौमों को प्रतीक्षा थी। अतएव हिन्दू साहिबान ने भी माना और प्रतीक्षा की :-

नि:कलंक अवतार आ, आ ऐ इमामे दो जहाँ
मुन्तज़िर हैं हम कि अब होता है कब तेरा ज़हूर
तू मुसलमानों का महदी, तू नसारा का मसीह
तू शहे सुक्काने पस्ती, तू शहिंशाहे तुयूर
(कवि प्रीतम ज़ियाई, अखबार वीर भारत-लाहौर, कृष्ण नम्बर अगस्त 1937 ई. पृष्ठ 16)

8. ''भगवान अपने अनाथ (लावारिस) बच्चों की पुकार सुनकर आइए। जन्माष्टमी आ गई और तुम न आए।''
(सुदर्शन चक्र का कृष्ण नम्बर 29 अगस्त सन् 1928 ई., पृष्ठ 25)

9. ''आजकल का ज़माना नीच पशुवृत्ति जीवन का नमूना है और जग लोगों की ऐसी भयावह स्थिति से मुक्ति के लिए एक अवतार के आने की आशा कर रहा है।''
(अखबार इंडियन कलकत्ता 14 अक्तूबर सन् 1900 ई.)

10. श्री लाला राम रक्खामल साहिब बर्क़ ने कहा :-

ढूँढते हैं हिन्द के दिन रात तुझको मर्दो ज़न
फिर तरसते हैं तेरे दीदार को अहले वतन
फिर मए इर्फां पिला दे साक़ी-ए-बज़्मे कुहन
खूने दिल से सींच दें ता बादा कश उजड़ा चमन
बर्क दिल में हिन्दुओं के फिर लगा ऐसी लगन
(प्रताप का कृष्ण नम्बर 11 अगस्त सन् 1925 ई. पृष्ठ 32)

पंचम खण्ड

इमाम महदी अलैहिस्सलाम की कुछ घोषणाएँ और उपदेश

संसार के सभी धर्मों के लोगों को चौदहवीं शताब्दी हिजरी के प्रारम्भिक काल में इमाम आख़िरुज़्ज़मान (अर्थात वर्तमान युग के अवतार) के प्रादुभार्व की प्रबल प्रतीक्षा थी। सभी धर्मों और फिर्कों की भविष्वाणियाँ यही समय बतला रही थीं। अधिकांश धर्मों का पारस्पारिक शास्त्रार्थ-युद्ध हिन्दुस्तान में अपनी चरमसीमा पर था। अन्तिम युग में आने वाले कथित अवतार की सारी निशानियाँ पूरी हो चुकी थीं इन परिस्थितियों की दृष्टि से इमाम महदी अलैहिस्सलाम का हिन्दुस्तान में पैदा होना ईश्वरीय (खुदा) का निर्णय था। अत: ठीक समय पर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के आदेश से सुधारक होने का दावा किया। आपने फ़रमाया :-

क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया होकर मसीह
खुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे बहार
वक्त था वक्ते मसीहा न किसी और का वक्त
मैं न आता तो कोई और ही आया होता
इब्नि मरियम हूँ मगर उतरा नहीं मैं चर्ख से
नीज़ महदी हूँ मगर बे-तेग़ और बे-कारज़ार

*- ''यह अजीब बात है और मैं उसको खुदा तआला का एक निशान समझता हूँ कि ठीक 1290 हिजरी में खुदा तआला की ओर से यह विनीत (खुदा तआला से) संवाद का सौभाग्य पा चुका था।'' (हक़ीक़तुल वह्यी पृष्ठ 199, निशान नं. 11)

*- खुत्बा इल्हामिया में यह घोषणा की :-

يَاأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّيْ أَنَا الْمَسِيْحُ الْمُحَمَّدِيُّ وَأَحْمَدُ الْمَهْدِيُّ۔

''कि हे लोगो ! मैं ही मसीहे मुहम्मदी हूँ और मैं ही अहमद महदी हूँ।

*- ये वे प्रमाण हैं जो मेरे मसीह मौऊद और महदी माहूद होने पर स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब एक व्यक्ति मुत्तक़ी (संयमित) होकर इन सारे प्रमाणों पर चिन्तन करेगा तो उस पर पूर्णत: स्पष्ट हो जाएगा कि मैं खुदा की ओर से हूँ। अत: न्यायपूर्वक देखो कि मेरे दावे के समय कितने मेरी सच्चाई पर गवाह एकत्र हैं।'' (तोहफ़ा गोलड़विया, पृष्ठ 102)

*- बहुत से अहले कश्फ़ (ब्रह्मज्ञान पाने वाले) मुसलमानों में से जिनकी संख्या एक हज़ार से भी अधिक होगी अपने पाए हुए ब्रह्मज्ञानों और खुदा तआला की पवित्र वाणी (क़ुरआन शरीफ) के निष्कर्ष से सहमत होकर यह कह गए हैं कि मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव चौदहवीं शताब्दी हिजरी के प्रारंभिक काल से कदापि आगे नहीं जाएगा और संभव नहीं कि ब्रह्मज्ञान पाने वालों का एक बड़ा समूह जो कि समस्त अगलों और पिछलों का समूह है वे सब झूठे हों और उनके सारे निष्कर्ष भी झूठे हों। इसलिए यदि मुसलमान इस समय मुझे स्वीकार न करें जो क़ुरआन, हदीस और पहली धार्मिक पुस्तकों की दृष्टि से और समस्त ब्रह्मज्ञान पाने वालों की गवाही के अनुसार चौदहवीं शताब्दी हिजरी के प्रारंभ में प्रकट हुआ हूँ तो अब उनकी ईमानी हालत के लिए सख्त अन्देशा है। क्योंकि मेरे इन्कार से अब उनका यह अक़ीदा हो जाना चाहिए कि जितने क़ुरआन शरीफ से मसीह मौऊद के लिए बड़े-बड़े विद्वानों ने निष्कर्ष निकाले थे वे सब झूठे थे और जितनी ब्रह्मज्ञानियों ने मसीह मौऊद के

ज़माने के लिए भविष्यवाणियाँ की थीं वे सारी झूठी थीं और जितने आसमानी और ज़मीनी निशान हदीस के अनुसार प्रकट हुए जैसे रमज़ान के महीने में कथित तिथियों के अनुसार चन्द्र सूर्य ग्रहण का लग जाना, धरती पर रेल की सवारी का आविष्कार होना और ज़ुस्सिनीन सितारे का निकलना, और सूरज का रोशनी न देना, यह सब झूठे थे, नऊज़ो बिल्लाह। ऐसे विचार का अन्तत: यह परिणाम होगा कि इस भविष्यवाणी को ही एक झूठी भविष्यवाणी कहेंगे और दुर्भाग्यवश आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झूठा समझ लेंगे।

(तोहफ़ा गोलड़विया, पृष्ठ 134-135)

मसीह व महदी के प्रादुर्भाव से इन्कार

महामान्य हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के पात्र और उनके आध्यात्मिक प्रतापी पुत्र एवं युग के सुधारक इमाम महदी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुरआन, हदीस और उम्मत के विद्वानों के बयानों एवं रोअया और कुशूफ़ (ब्रह्मज्ञानों) के अनुसार मैं ठीक समय पर खुदा की ओर से आया हूँ :-

''इसलिए अगर मुसलमान इस समय मुझे स्वीकार न करें... तो अब उनकी ईमानी हालत के लिए सख़्त अन्देशा है क्योंकि मेरे इन्कार से... परिणाम, अन्तत: यह होगा कि इस भविष्यवाणी को ही एक झूठी भविष्यवाणी ठहराएँगे।''

(तोहफा गोलड़विया, पृष्ठ 135)

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की ठीक समय पर दी गई चेतावनी बिल्कुल सत्य सिद्ध हुई। अत: मेरे विचारानुसार

बड़े-बड़े स्पष्ट विचार रखने वाले और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से सुसज्जित और शिक्षा और समृद्धि के ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन लोग इस समय मसीह व महदी के प्रादुर्भाव की इस भविष्यवाणी को झूठी कह रहे हैं जिनके दो विशेष वर्ग हैं :-

(1) एक वर्ग के वरिष्ठ प्रवक्ता और ''तुलुए इस्लाम'' के सम्पादक श्री ग़ुलाम अहमद साहिब परवेज़ हैं जो स्पष्ट शब्दों में किसी अवतरित होने वाले की विचारधारा को घातक, खत्मे नुबुव्वत के उलट और मूर्खतापूर्ण विचारधारा कहते हैं। ये बड़े स्पष्ट शब्दों में मसीह या महदी के प्रादुर्भाव का खण्डन करते हैं।

(2) दूसरा वर्ग जो स्पष्ट रूप से इन्कार करने की बजाए एक नई तावील (व्याख्या) करने लगा है। उनके निकट ज़रूरी नहीं कि ऐसा कोई व्यक्ति आए जो इमाम महदी होने का दावा करे, न यह ज़रूरी है कि लोगों को उसके महदी होने का ज्ञान हो। बल्कि संभव है कि उसे स्वयं भी ज्ञात न हो कि महदी है और वह बिना किसी दावे के मर जाए। हालाँकि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके कामों और कारनामों को देखकर लोग समझ जाएँगे कि वही महदी था। इस वर्ग और विचारधारा के वरिष्ठ प्रवक्ता श्री सैयद अबुल-आला मौदूदी संस्थापक जमाअते इस्लामी हैं।

''तुलूए इस्लाम'' के सम्पादक श्री ग़ुलाम अहमद साहिब परवेज़ के खुले-खुले मुखालिफाना बयान और मसीह व महदी के आने की पूर्णत: विपरीत विचारधारा तुलूए-इस्लाम की प्रतियों के अतिरिक्त विशेषरूप से उनकी रचनाएँ ''शाहकारे रिसालत, तहरीके अहमदियत और खत्मे नुबुव्वत'' में वर्णित है। इसके अतिरिक्त मौलाना मौदूदी साहिब के विचार उनकी किताब 'तज्दीद व अहया-ए-दीन' से स्पष्ट हैं। उनके विचारों से ऐसा ज्ञात होता है कि वह स्वयं महदी के स्थान पर आसीन हैं लेकिन उसकी घोषणा ज़रूरी नहीं समझते। बल्कि उनकी मृत्यु के

बाद स्वयं ही लोग समझ जाएँगे। वह लिखते हैं :-

''न मैं यह आशा रखता हूँ कि वह अपने महदी होने की घोषणा करेगा। बल्कि संभव है कि उसे स्वयं भी अपने महदी होने का पता न हो और उसकी मौत के बाद उसके कारनामों से दुनिया को ज्ञात होगा कि यही था खिलाफत को नुबुव्वत की तर्ज़ पर क़ायम करने वाला जिसके आने की शुभ सूचना दी गयी थी।''
(तज्दीद व अहया-ए-दीन, पृष्ठ 33)

इन्कार का कारण

इमाम महदी के प्रादुर्भाव से सीधे-सीधे इन्कार करना या घुमा फिरा कर इन्कार करना ये दोनों विचारधाराएँ ग़लत हैं। क्योंकि इमाम महदी के प्रादुर्भाव पर मुसलमानों का सदैव से एकमत रहा है। इस इन्कार का मूल कारण निराशा है। क्योंकि सारी निशानियाँ पूरी होने और कथित समय बीतने के बाद भी यदि महदी नहीं आए तो फिर कब आएँगे ? इसके अतिरिक्त इन परिस्थितियों में लोगों को संतुष्ट या चुप करने की दो ही युक्तियाँ संभव थीं। जिनमें से एक परवेज़ साहिब ने अपना ली और दूसरी श्री मौलाना मौदूदी साहिब ने। खेद है !

सर्वमान्य अक़ीदा

जहाँ तक इस्लाम के विभिन्न फ़िर्क़ों और विद्वानों का मत है तो उनके मध्य आख़िरी युग में आने वाले मसीह व महदी के रूप में एक अवतार के आने पर आंशिक मतभेदों के बावजूद सदैव एकमत रहा है।

1. शिया फ़िर्क़े की एक मशहूर पत्रिका 'मआरिफे इस्लाम'

लाहौर नवम्बर सन् 1968 ई. अर्थात शाबान 1388 हिजरी में साहिबुज़्ज़मान नामक एक विशेषाँक प्रकाशित हुआ। उसमें 'हक़ीक़ते मुन्तज़र' के शीर्षक पर आधारित एक तहक़ीक़ी लेख में साबित किया गया है कि ''क़ुरआन मजीद से पहले की किताबें भी एक सार्वभौमिक इमाम और सुधारक की प्रतीक्षक हैं।'' और इस्लाम धर्म के विद्वानों ने भी लिखा है कि हज़रत मसीह आसमान से आयेंगे और महदी अलैहिस्सलाम के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे... लगभग 2000 हदीसों और अखबारों में इसका वर्णन पाया जाता है जिन्हें हदीस के बहुत से इमामों ने प्रतिलिपित किया है। तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, इब्नि माजा, हाकिम, तिबरानी, अबुल अला अल मूसली इत्यादि, ये शिया सुन्नी हदीसें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत इब्नि अब्बास रज़ि. इब्नि उमर रज़ि. इब्नि मस्ऊद रज़ि, हुज़ैफ़ा यमानी रज़ि. उम्मे सलमा रज़ि., उम्मे हबीबा रज़ि. सौबान रज़ि. क़ुर्रा इब्नि आयास, अली अल हिलाली, अब्दुल्लाह इब्नि हारिस, अबू हुरैरा रज़ि. अनस रज़ि. अबू सईद खुदरी रज़ि. से वर्णित हैं। शेख मुफीद ने किताब अलग़ैबा, शेख सुदूक़ ने कमालुद्दीन व तमामुन्नेमत, शेख अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्नि यूसुफ़ कुन्जी शाफई ने अलबयान फी अखबार साहिबुज़्ज़मान लिखा। उनके बाद इस शीर्षक पर अधिकतर लेखकों ने छानबीन की और अब भी लिखने और संकलन करने की प्रक्रिया जारी है।'' (पृष्ठ 41-42)

2. नवाब अबुल खैर नूरुल हसन खान साहिब नुज़ूले मसीह के अक़ीदे को इस्लाम का सर्वमान्य अक़ीदा ठहराते हुए लिखते हैं :-

''नुज़ूले मसीह अलैहिस्सलाम में तो बाल के बराबर का भी कुछ अन्तर नहीं है। ईसाई भी उनके आने के क़ाइल और प्रतीक्षक हैं... इब्नि मरियम तो सब के निकट अवश्य ही

आएँगे।''

(इक्तिराबुस्साअत पृष्ठ 147, 148, मुद्रित सन् 1301 हिजरी)

3. सैयद सुलैमान नद्वी साहिब लिखते हैं :-

''मुझे जहाँ तक ज्ञान है मसीह के नुज़ूल का इन्कार किसी ने नहीं किया। मुअतज़िला फ़िर्क़े की किताबें नहीं मिलतीं जो हाल ज्ञात हो। हाँ इब्नि हजम (मसीह की) मृत्यु के क़ाइल थे और नुज़ूल के भी।'' (इक्बाल नामा अर्थात मज्मुआ मकातीब-ए-इकबाल भाग 1, पृष्ठ 196 हाशिया मुद्रित लाहौर)

4. श्री सैयद अबुल आला मौदूदी साहिब स्वयं भी लिख चुके हैं :-

''मसीह अलैहिस्सलाम का पुन: अवतरण मुसलमानों के मध्य एक सर्वमान्य बात है और इसकी बुनियाद क़ुरआन, हदीस और मुसलमानों के इज्माअ (सर्वसम्मति) पर है... हदीस से यह पूर्णत: साबित है। इसी तरह व्याख्याकारों और हदीस वर्णनकर्ताओं की भी सर्व सहमति है कि मसीह के पुनरागमन की भविष्यवाणी सही है।'' (क़ादियानी मसला और उसके राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक पहलू, पृष्ठ 33-36, मुद्रित लाहौर सन् 1963 ई.)

5. श्री इबादुल्लाह अख्तर साहिब ''मशाहीरे इस्लाम'' में लिखते हैं :-

''इस्लाम के कुछ उलमा ने इन हदीसों को वर्णन और विश्लेषण की दृष्टि से तथ्यहीन ठहराकर मसीह व महदी के पुनरागमन का इन्कार कर दिया... लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि मसीह के पुनरागमन के बारे में बहुतों का अब भी पहले की भाँति अक़ीदा है। ईसाइयों को तो मसीह के पुनरागमन की प्रतीक्षा है और रहेगी... और इसमें तो सन्देह नहीं कि मुसलमान भी मसीह व महदी के प्रतीक्षक हैं।'' (मशाहीरे इस्लाम जिल्द 1,

पृष्ठ 18, विभाग सकाफते इस्लामिया लाहौर)

6. अकीदों के बारे में अहले सुन्नत की विश्वसनीय पुस्तक 'शरह अक़ायदे नस्फ़ी' है। उसमें विस्तारपूर्वक महदी के प्रादुर्भाव के अक़ीदे का वर्णन करते हुए मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहिब लिखते हैं :-

قَدْ تَوَاتَرَتِ الْاَحَادِیْثُ فِیْ خُرُوْجِ الْمَهْدِیِّ

कि इमाम महदी के प्रादुर्भाव के बारे में क्रमिक रूप से बहुत सी हदीसें मिलती हैं। (निबरास, शरह अक़ायदे नस्फ़ी, पृष्ठ 524)

7. अल्लामा इब्नि खुल्दून अपने इतिहास में इमाम महदी के प्रादुर्भाव के अकीदे का वर्णन करते हुए लिखते हैं :-

اِعْلَمْ اَنَّ الْمَشْهُوْرَ بَیْنَ الْکَافَّةِ مِنْ اَهْلِ الْاِسْلَامِ عَلٰی مَمَرِّ الْاَعْصَارِ اَنَّهٗ لَا بُدَّ فِیْ اٰخِرِ الزَّمَانِ مِنْ ظُهُوْرِ رَجُلٍ مِنْ اهْلِ الْبَیْتِ یُؤَیِّدُ الدِّیْنَ وَ یُظْهِرُ الْعَدْلَ......وَ یُسَمّٰی بِالْمَهْدِیِّ۔

अर्थात स्मरण रहे कि एक लम्बा समय बीतने के बाद भी मुसलमानों में यह अक़ीदा मशहूर रहा है कि आख़िरी ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के अहले बैत (अनुयायियों) में से एक व्यक्ति पैदा होगा जो धर्म का समर्थन करेगा और न्याय को क़ायम करेगा और उसको महदी कहा जाएगा।

(तारीख इब्नि खुल्दून जिल्द 1, पृष्ठ 260, अलफसलुस सालिस)

तात्पर्य यह कि क़ुरआन करीम, मुसलमानों का चिन्तन मनन, हदीसें और व्याख्याकारों एवं मुहद्दिसों के कथन और इस्लाम के ऋषि मुनि सूफी सन्त इस पर साक्षी हैं कि मसीह के पुनरागमन और इमाम महदी के प्रादुर्भाव का अक़ीदा मुसलमानों का सर्वसम्मत अक़ीदा है जो अत्यधिक ठोस बुनियादों

पर आधारित है। इसलिए आज भी एक सच्चे मुसलमान पर अनिवार्य है कि युग और निशानियों पर ग़ौर करके इमाम महदी को पहचाने और उसको हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सलाम पहुँचाए।

''गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं''

इमाम महदी कौन और कहाँ है?

इस्लामी जगत के सर्वसम्मत अक़ीदे के अनुसार आवश्यक था कि समयानुसार निशानियाँ पूरी होने के तत्पश्चात कथित इमाम महदी प्रकट होते। अत: वह प्रकट हो चुके हैं। उनका नाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम है जो 1250 हिजरी (अर्थात सन् 1835 ई.) में क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर में पैदा हुए। 1268 हिजरी में युवावस्था को पहुँचे और 1290 हिजरी में 40 वर्ष की आयु में खुदा तआला के संवाद से सौभाग्य प्राप्त किया और खुदा तआला के आदेश से चौदहवीं शताब्दी हिजरी के प्रारंभिक काल में इमाम महदी और मसीह मौऊद होने की घोषणा की और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार सन् 1311 हिजरी (अर्थात सन् 1894 ई.) के रमज़ान मास में आपकी सच्चाई के समर्थन में चाँद-सूरज को ग्रहण लगा। आप नास्तिकों, हिन्दुओं ईसाइयों और अन्य क़ौमों के हमलों से इस्लाम की प्रतिरक्षा में खुदा की सहायता और समर्थन से विजयी जरनैल की भाँति विजयी हुए। आपके समर्थन में हज़ारों आसमानी और ज़मीनी निशान प्रकट हुए। आपने दुनिया के किनारों तक इस्लाम के प्रचार और क़ुरआन के प्रसार की एक स्थायी और सुदृढ़ व्यवस्था स्थापित की। आपके देहान्त

के पश्चात मई सन् 1908 ई. से आपकी जमाअत एक सुदृढ़ निज़ाम-ए-खिलाफत से चिमटकर पूरे विश्व में इस्लाम का प्रचार और क़ुरआन का प्रसार कर रही है। हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन खलीफतुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद खलीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाहो तआला और हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह राबेअ के देहान्त के बाद सन् 2003 ई. से हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब पाँचवे खलीफा के रूप में आपके मिशन को पूरा करने के लिए ग़ल्बा-ए-इस्लाम की राह पर आपकी जमाअत का मार्ग-दर्शन कर रहे हैं। आज विश्व में इस्लाम और क़ुरआन के प्रचार व प्रसार के लिए हज़ारों मिशन स्थापित हो चुके हैं। लगभग 56 से अधिक भाषाओं में क़ुरआन करीम का अनुवाद हो चुका है और हज़ारों मस्जिदों के अतिरिक्त अनेक विद्यालय और चिकित्सालय सुचारू रूप से चल रहे हैं। हिन्द-पाक के अतिरिक्त अन्य देशों से भी लगभग सैकड़ों अखबार और पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इन सारी कोशिशों और कार्यों का स्थायी केन्द्र क़ादियान (भारत) है।

भाग्यवान हैं वे जिन्हें चिन्तन-मनन और ख़ुदा से दुआओं के फलस्वरूप हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उम्मत के हज़ारों औलिया किराम और बुज़ुर्गों के रोअया, कुशूफ और भविष्यवाणियों के पात्र हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के बारे में ज्ञान प्राप्त हो। क्योंकि आने वाला आ चुका, अब दूसरा कोई न आएगा। चौदहवीं शताब्दी बीत चुकी है और सारी निशानियाँ पूरी हो गईं। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

वह आया मुन्तज़िर थे जिसके दिन रात
मुअम्मा खुल गया रोशन हुई बात
दिखाईं आसमाँ ने सारी आयात
ज़मीं ने वक़्त की दे दीं शहादात
फिर इसके बाद कौन आएगा हैहात
खुदा से कुछ डरो छोड़ो मआदात
खुदा ने इक जहाँ को यह सुना दी
फ़ सुब्हानल्लज़ी अख़्ज़ल अआदी

✻✻✻

कलाम (कविता)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा`हूद अलैहिस्सलाम

क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया होकर मसीह
खुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे बहार
आसमाँ पर दावते हक़ के लिए इक जोश है
हो रहा है नेक तब्ओं पर फरिश्तों का उतार
आ रहा है इस तरफ अहरारे यूरोप का मिज़ाज
नब्ज़ फिर चलने लगी मुर्दों की नाग: ज़िन्दावार
कहते हैं तस्लीस को अब अहले दानिश अलविदा
फिर हुए हैं चश्मा-ए-तौहीद पर अज़ जांनिसार
बाग़ में मिल्लत के है कोई गुले राना खिला
आई है बादे सबा गुलज़ार से मस्ताना वार
आसमाँ से है चली तौहीदे ख़ालिक़ की हवा
दिल हमारे साथ हैं गो मुँह करें बक बक हज़ार
इस्मऊ सौतस्समाअ जा अल्मसीह जा अलमसीह
नीज़ विष्णु अज़ ज़मीं आमद इमामे कामगार
आसमाँ बारिद निशाँ अलवक़्त मी गोयद ज़मीं
ईं दो शाहिद अज़ पै मन नारा जन चूँ बेक़रार
अब इसी गुलशन में लोगो राहतो आराम है
वक़्त है जल्द आओ ऐ आवार गाने दश्ते खार
इक ज़माँ के बाद अब आई है यह ठण्डी हवा
फिर ख़ुदा जाने कि कब
आवें ये दिन और यह बहार

***